राष्ट्र जागरण का शंखनाद

शाश्वत हिन्दू गर्जना

वर्ष : 30 माह : जून 2023 सहयोग : ₹ 10

रानी ने बाज बहादुर
और मियाना अफगानों को किया था परास्त

छिंदवाड़ा से करीम सहित
हिज्ब-उत-तहरीर के पकड़े गए
11 आतंकवादी

भारत की महान बलिदानी नारी : रानी दुर्गावती

—डॉ. किशन कछवाहा

इतिहास में वीरांगना रानी दुर्गावती एक ऐसा नाम है जो जाज्वल्यमान नक्षत्रों के बीच चमकते हुये सूर्य के समान शोभायमान है। यही नाम अपने ओज और सौन्दर्य के कारण भी सार्थक करता है। नारी जाति चमकते हुये सूर्य के समान शोभायमान है। यही नाम अपने ओज और सौन्दर्य के कारण भी सार्थक करता है। नारी जाति की गौरव रानी दुर्गावती गढ़ा मंडला की महारानी थी, लेकिन उनकी गणना भारत ही नहीं विश्व की उन महान एवं प्रमुखतम नारियों में की जा सकती है, जिन्होंने अपने राष्ट्रीय जीवन का बहुविध सर्वांगीण विकास तो किया ही, साथ ही विदेशी क्रूर मुगल आक्रांताओं के खिलाफ चले आजादी के संघर्ष में की गौरव रानी दुर्गावती गढ़ा मंडला अपने शौर्य की पराकाष्ठा प्रदर्शित करते हुये, अपने जीवन मूल्यों के साथ साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपना वीरोचित बलिदान भी दिया। यह आने वाली पीढ़ियों के लिये सदा के लिये प्रेरणा स्त्रोत बना रहेगा।

भारत को आजादी मिलने के 75 वर्ष बाद जब हम स्वाधीनता का अमृतोत्सव मना रहे हैं, तब भारत को अपने राष्ट्रीय आदर्शों को भूल जाने, स्वार्थपरायण हो पतन के गर्त में तेजी से बढ़ने से रोकने में इस महान नारी के महिमामंडित जीवन से हमें प्रेरणा प्राप्त होगी। 24 जून वीरांगना रानी दुर्गावती का बलिदान दिवस है। इस दिन हम इस वीर रानी के उस अनछुये पहलू को याद करेंगे कि जब आक्रान्ता शेरशाह सूरी की मृत्यु कालिंजर के किले में रानी के प्रहारों से हुयी थी। इस वीरता के इतिहास की जानकारी बहुत कम लोगों को होगी। कालिंजर का किला उत्तरप्रदेश के बांदा जिले में स्थित है। लगभग प्रत्येक आक्रान्ता को इस किले की ख्याति और उसमें प्रचुर धन दौलत की अथाह सामग्री होने की जानकारी और उसे प्राप्त करने की अदम्य महात्वाकाँक्षा यहाँ तक ले आती थी। महमूद गजनवी, अलाउद्दीन खिलजी, बाबर और शेरशाह सूरी ने भी ऐसी कोशिशें की। शेरशाह सूरी जौनपुर के एक जागीरदार का बेटा था, जो सन् 1529 में बंगाल का शासक बना था। उसने सन् 1539 में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित किया था और मुगलिया सल्तनत को अपने अधिकार में ले लिया था। उसने सन् 1545 में कालिंजर के किले पर हमला कर दिया। यह वह किला था, जहाँ रानी दुर्गावती का जन्म हुआ था। जब शेरशाह का आक्रमण हुआ, उस समय रानी दुर्गावती की आयु मात्र 20वर्ष के आसपास रही होगी। शेरशाह अपने तोपखाने को लेकर आया था। वह रानी दुर्गावती की वीरता और सौन्दर्य से भी प्रभावित था। उसने इस बावत अनेक धूर्ततापूर्ण चालें चली, प्रलोभन भी देना चाहा।उसकी सारी शर्तों को ठुकरा दिया गया। भीषण युद्ध हुआ, राजा कीरत सिंह चंदेल घायल हो गये। रानी दुर्गा ने भी चाल चली समर्पण की बात कही, पर जैसे ही शेरशाह तोप की सीमा में आया, रानी ने तोप चलाने का आदेश दे दिया। उसने भागने की कोशिश की परन्तु वह वहाँ तोप के गोले से मारा गया। यह घटना 22 मई सन् 1545 की है। एक इतिहासकार ने लिखा है कि वह गोलाबारी से घबड़ा गया था, वह खुद की तोप से मरा। पर यह तथ्य स्पष्ट है कि उसकी मौत रानी दुर्गावती की रणनीति के तहत ही हुयी थी।

इसी वर्ष उनका विवाह गोंडवाना के प्रख्यात राजा दलपत शाह के साथ कर दिया गया और वे जबलपुर आ गयीं। निरन्तर उनके राज्य का विस्तार होता गया, वह मंडला से नागपुर, नर्मदा के किनारे से लेकर भोपाल तक जिसमें रायसेन, सीहोर, भोपाल, होशंगाबाद आदि जिलों के क्षेत्र शामिल थे। उनके पति की मृत्यु के पश्चात उन्होंने अपने अल्प व्यस्क पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर आरूढ़ कराया। इस बीच मांडव के सुल्तान बाज बहादुर ने तीन बार जबलपुर के आसपास डेरा डालकर आक्रमण करने की असफल कोशिशें की। हर बार उसे शर्मनाक तरीके से पराजित किया गया। अंतिम बार उसकी सेना को तीन ओर से घेरकर बन्दी बना लिया गया और सिर्फ अकेले सुल्तान को भागने को विवश दिया गया। जहाँ उसकी सेना डेरा डाले रही, उस स्थान पर एक सुन्दर तालाब खुदवाया गया था। जिसे मांडुताल नाम दिया। अब वह तालाब माढ़ोताल के नाम से जाना जाता है।

सन् 1563 में अकबर के सेनापति आसफखाँ जिसका अधिकार क्षेत्र इलाहाबाद था, ने भी हमला किया लेकिन वह भी बुरी तरह पराजित होकर मदार टेकरीकी ओर से भाग खड़ा हुआ। दलपत शाह के संग्राम शाह ने अपने 40वर्षो के राज्यकाल में 52 गढ़ों को जीतकर अपनी कीर्ति में भी विस्तार किया था। वे 52 गढ़ ही प्रशासनिक इकाईयाँ थीं। राज्य की सुरक्षा इन पर निर्भर थी। प्रत्येक गढ़ के प्रभाव क्षेत्र के ग्रामों की सुरक्षा तथा प्रशासन का व्यवस्थित प्रबंध था। राज्य का विस्तार 67,500 वर्गमील तक था। आवागमन के मार्ग थे। कृषि कार्य करने वाले किसान सम्पन्न थे, वे स्वर्ण मुद्रा और हाथी के रूप में लगान दिया करते थे। उन दिनों राजधानी (जबलपुर) गढ़ा में थी,लेकिन संग्रामशाह राज्य का कार्य एवं प्रबंध सिंगौरगढ़ स्थित किले से देखते थे, क्योंकि सुरक्षा की दृष्टि से जबेरा घाटी से होकर जाने वाले मार्ग का नियंत्रण गढ़ा की सकरी गलियों से संभव नहीं था। हमलावर प्रायः मालवा और बुंदेलखण्ड की ओर से ही प्रायः हमला करते थे। गौंडवाना राज्य सन् 1480 से सन् 1564 तक लगभग84 वर्षो तक पूर्ण स्वतंत्र रहा।

शेष पृष्ठ—9 पर

शाश्वत हिन्दू गर्जना
मासिक
महाकौशल प्रांत
वर्ष 30 अंक – 05
जून –2023
विक्रमाब्द् – 2080
युगाब्द – 5125
✤
संपादक
डॉ. किशन कछवाहा
✤
सह–संपादक
डॉ. नुपूर निखिल देशकर
✤
सलाहकार संपादक
डॉ. यतीश जैन
चंद्रशेखर पचौरी
✤
प्रकाशक
नरेन्द्र जैन
विश्व संवाद केन्द्र
महाकौशल न्यास, जबलपुर
✤
सम्पर्क
प्लॉट नं.1, म.नं. 1692
नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा मार्ग, जबलपुर
फोन–0761–4006608
✤
मुद्रक
ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस
जबलपुर
फोन–0761–2620184

हिन्दू साम्राज्य के अधिष्ठाता छत्रपति शिवाजी महाराज

डॉ. किशन कछवाहा

शिवाजी महाराज का पुरुषार्थ एवं साहस देखने के बाद लोगों को भरोसा हो गया था कि हिन्दुराष्ट्र की सुरक्षा करना है, और मुस्लिम आक्रान्ताओं पर विजय हासिल करना है, तो उसका हल ढूँढकर हिन्दू समाज हिन्दू धर्म, संस्कृति व राष्ट्र को प्रगति पथ पर अग्रसर कर सकता है, तो वह एक ही व्यक्ति है, जिसका नाम है शिवाजी। उनके अद्भुत साहस को देखकर कवि भूषण जैसे मूर्धन्य विद्वान औरंगजेब की चाकरी को लात मार कर दक्षिण में पधारे और उन्होंने शिवाजी महाराज के सामने अपनी शिवा वाहिनी जैसी ओजस्वी रचना का गायन कर उनके उत्साह में वृद्धि की वे स्वयं देशभक्त थे। वे धन और मान के लालची भी नहीं थे। छत्रपति शिवाजी माँ तुलजा भवानी के भक्त थे। हिन्दू हृदय सम्राट पश्चिम में भारतीय गणराज्य के महानायक का जन्म पुणे के जुनार स्थित शिवनेरी दुर्ग में शाह जी भोंसले और माता जीजाबाई के घर हुआ था। दादा कोंण देव के दिशा निर्देशन में शिवाजी ने युद्ध कौशल की तमाम कलायें अल्प काल में ही सीख ली थी उन्हें गुरिल्ला या छापामार युद्ध शैली का आविष्कारक माना जाता है। छत्रपति शिवाजी ने बीजापुर मुगल सल्तनत के 3000 सैनिकों को मौत के घाट उतार कर अपने सैनिकों में अपूर्व उत्साह का संचार किया था। बीजापुर सल्तनत की दुरावस्था देखकर औरंगजेब आशंकित हो उठा था। परिणाम स्वरूप सन् 1659 में आदिलशाह ने अपने सबसे विश्वस्त और बहादुर समझे जाने वाले सेनापति अफजल खान को हम लाकरने के लिये भेजा शिवाजी और अफजल खाँ 10 नवम्बर 1659 को प्रतापगढ़ के किले के पास एक झोपड़ी में मिले अफजल खाँ ने शिवाजी पर धोखे से वार किया वे अपने कवच के कारण बच गये लेकिन तत्काल संभले और अपने धनखे से प्रहार कर अफजल खाँ को मार डाला। इस प्रकार औरंगजेब ने शिवाजी पर हमले के अनेक प्रयास किये लेकिन वह सफल नही हो सका। 6 जून 1674 का दिन स्मरणीय बन गया जब (ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी) को रायगढ़ स्थित किले में उनका राज्यारोहण समारोह पूरी भव्यता के साथ सम्पन्न किया गया। इस समय तक दक्षिण के सभी राज्य हिन्दू साम्राज्य के अन्तर्गत लाये जा चुके थे । इसमें खान देश, बाजीपुर, कारवार, कोल्कापुर जाजिरा, रामनगर और बेलगाम आदि रियासतों के साथ साथ बेल्लौर और जिंजी को भी अपने आधिपत्य में ले लिया गया था तंजावुर और मैसूर भी उनके आधीन हो चुके थे। वे अत्यधिक प्रखर शासक सिद्ध हुये वे हिन्दू धर्म व परम्परा के प्रबल पक्षधर थे शिवाजी ने काफी कुशलता से अपनी सेना को सज्जित किया था उनके साथ एक विशाल नौ सेना (**NAVY**) भी थी। शिवाजी महाराज ने समाज में किये जाने परिवर्तन बहुत ही सोच समझ कर किये और साहस के साथ बेधड़क कदम उठाये तलवार की नोंक पर जो इस्लामीकरण के प्रयास किये जा रहे थे, उन उन विदेशी मुसलमानों को चुन–चुन कर निकाल बाहर किया। अपने ही समाज के मुस्लिम हो चुके के उस वर्ग को आत्मसात करने की प्रक्रिया भी अपनायी। इस बात का भी ध्यान रखा कि आसपास के मुस्लिम हिन्दू प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार न कर सकें। उन्होंने चिपलूण के पास स्थित परशुराम मंदिर का पुनर्निर्माण कराया और औरंगजेब को काशी विश्वेश्वर मंदिर तोड़े जाने के बाद कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुये पत्र भी लिखा। मानवीय गुणों के आदर्श के रूप में छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन की हर पहल हमारे लिये प्रेरणा स्त्रोत एवं मार्गदर्शक है। लोगों में हर्ष का वातावरण था कि हिन्दू समाज की पाँच सी साल पुरानी समस्या का हल हो गया था। शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक सम्पूर्ण हिन्दू राष्ट्र के लिये एक संदेश था कि यही विजय का मार्ग है, वह भी एक मात्र इसी पर चलो। उनका मानना था कि भारत एक सनातन देश है. यह हिन्दुस्थान है और यहाँ पर अपना राज्य होना ही चाहिये। अपने धर्म का विकास होना ही चाहिये।

छिंदवाड़ा से करीम सहित हिज्ब-उत-तहरीर के पकड़े गए 11 आतंकवादी

हिब्ज–उत–तहरीर (HuT) के आतंकवादी रायसेन के जंगल में करते थे कैंप, लेते थे फायरिंग की ट्रेनिंग सभी गिरफ्तार गोपनीय रूप से जंगलों में जाकर क्लोज कॉम्बैट ट्रेनिंग कैंप आयोजित कर निशानेबाजी की प्रैक्टिस करते थे। उक्त प्रशिक्षण कैंप में हैदराबाद से आए संगठन के दक्ष प्रशिक्षक द्वारा कैंप में शामिल सदस्यों को ट्रेनिंग दी जाती थी गोपनीय रूप से दर्श (धार्मिक सभा) आयोजित कर भड़काऊ तकरीरें दी जाकर जेहादी साहित्य का वितरण किया जाता था।

– डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत में इस्लामिक आतंकी किस तरह से जिहाद के रास्ते पर चलकर गैर मुसलमान को टार्गेट करने में लगे हैं, इसके एक के बाद एक कई मामले सामने आ चुके हैं। विदेशी फडिंग, मदरसों का सहयोग, कुरान की आयतों का अपनी सुविधानुसार इस्तेमाल, भड़काऊ भाषण से रुपया इकट्ठा करना और आनेवाले वक्त में भारत को इस्लामिक देश बना देने का इनका स्वप्न है। कहा जाए कि यदि इन चरमपंथियों के आपसी गठजोड़ और मंसूबे अब तक बार–बार सामने आने के बाद भी सफल नहीं हो पाए हैं तो इसका श्रेय देश की गुप्तचर संस्थाओं की सजगता, सक्रियता, एनआईए और राज्यों की एंटी टेररिज्म स्क्वॉड (एटीएस) को जाता है। सोच सकते हैं कि ये सभी सतर्क, मुस्तैद न हों तो देश का ये क्या हाल करेंगे ! ताजा मामले में एक बार फिर मध्य प्रदेश के एंटी टेररिज्म स्क्वॉड के हाथों बड़ी सफलता लगी है। एटीएस की ये कार्रवाई उन तमाम सेक्युलर वादी लोगों के मुंह पर भी एक तमाचा है जो हाल ही में इस्लामिक आतंक एवं लव जिहाद को केंद्र में रखकर बनाई गई फिल्म ''द केरल स्टोरी'' का विरोध करने में लगे हैं और इसे झूठा करार दे रहे हैं। सोचने वाली बात है कि ये सभी खतरनाक मानसिकता रखनेवाले गिरफ्तार आरोपित चरमपंथी जिम ट्रेनर, कम्प्यूटर टेक्नीशियन, दर्जी, ऑटो ड्राइवर आदि के रूप में आमजन के मध्य रहकर अपने कार्य को अंजाम दे रहे थे, जिसमें कि एक तो भोपाल के कोहेफिजा में (एडुफोरम ट्यूटोरियल्स) नाम से अपना कोचिंग सेंटर चला रहा था। (शिक्षा के माध्यम से इस्लामिक जिहाद फैलाने का प्रयास)। एक एनजीओ से जुड़ा हुआ नाम सामने आया है।

पकड़े गए आतंकियों का स्वप्न भारत में इस्लामिक शरिया कानून लागू करना है

मध्य प्रदेश में इस्लामिक चरमपंथी–आतंकी कैसे–कैसे हथियारों का प्रशिक्षण ले रहे हैं। जहां मुसलमान जनसंख्या अधिक है, उन क्षेत्रों को कैसे ये आतंकी सरलता से अपना हथियार बना लेते हैं इसके एक के बाद एक खुलासे इन दिनों राज्य में हो रहे हैं। फिर एक बार एटीएस चीफ आदर्श कटियार और उनकी टीम ने प्रदेश में चल रहे आतंकवादियों के उस मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है, जो कि गैर मुसलमानों के लिए इतना सख्त है कि भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर इस्लामिक शरिया कानून लाना चाहता है। दुनिया के 60 देशों में अपना नेटवर्क स्थापित कर देनेवाले इस इस्लामिक चरमपंथी आतंकी संगठन हिज्ब उत् तहरीर (**HuT**) का ख्वाब भारत में गजवा–ए–हिंद करना है।

गजवा–ए–हिंद के लिए काम कर रहे थे सभी आतंकी

यहां समझ लीजिए, गजवा का अर्थ होता है– इस्लाम को फैलाने के लिए की जाने वाली जंग। इस युद्ध में शामिल इस्लामिक लड़कों को **"गाजी"** कहा जाता है। इस तरह मोटे तौर पर गजवा–ए–हिंद का अर्थ हुआ भारत में युद्ध के जरिए इस्लामिक राज्य की स्थापना करना। मध्य प्रदेश में भी इस विचार के सवप्न को साकार करने के लिए इस्लामिक चरमपंथी– आतंकियों ने बड़ी–बड़ी योजनाएं बना रखी थीं, लेकिन मध्य प्रदेश एटीएस ने पिछले 24 घण्टों में अनेक स्थानों पर छापामारी कर राज्य में गुपचुप तरीके से पनप रहे हिज्ब उत् तहरीर (HuT) संगठन के 16 संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है। ये राज्य के जंगलों का इस्तेमाल रायफल चलाने के प्रशिक्षण के लिए कर रहे थे। इसके पास से मिले देशविरोधी दस्तावेज, तकनीकी उपकरण, कट्टरवादी साहित्य और अन्य जब्त की गई तमाम सामग्री इनके आतंक के रास्ते पर चलने का पुख्ता प्रमाण दे रहे हैं।

आरोपितों को 19 मई तक के लिए रिमांड पर भेजा

मध्य प्रदेश के गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा का इस संबंध में कहना है भोपाल से गिरफ्तार किए गए कट्टरपंथी संगठन हिज्ब–उत–तहरीर (HuT) से जुड़े 10 लोगों को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जा रही है। हैदराबाद से गिरफ्तार 5 अन्य सदस्यों को भोपाल लाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पांच जो लोग हैदराबाद (तेलंगाना) से गिरफ्तार किए गए, उन्हें भी पुलिस पार्टी भोपाल ला रही है। इन सभी की फडिंग की गंभीरता से जांच की जा रही है।

आरोपितों को 19 मई तक के लिए रिमांड पर भेजा गया है।

गृहमंत्री ने बताया कैसे लेते थे ये आतंकी जंगलों में रायफल का प्रशिक्षण डॉ. नरोत्तम मिश्रा बताते हैं कि ये लोग मध्य प्रदेश में जिला रायसेन के जंगलों में कैंप करके गोलीबारी का प्रशिक्षण लेते

थे। ये सब बातें जांच के दायरे में आ गई हैं। राष्ट्रविरोधी और आतंकवादी गतिविधियों में कथित तौर पर लिप्त हिज्ब–उत–तहरीर (एचयूटी) के 11 सदस्यों को मध्य प्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने गिरफ्तार किया था। एटीएस की गिरफ्त में आए आरोपित भोपाल से सटे रायसेन के जंगलों में गोपनीय रूप से क्लोज कॉम्बैट ट्रेनिंग कैंप में निशानेबाजी की प्रैक्टिस करते थे। जंगलों के बीच स्थित प्रशिक्षण कैंप में हैदराबाद से आए संगठन के संक्रिय सदस्य कैंप में शामिल सदस्यों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग देते थे। कार्यवाई को देखा जा रहा सीएम शिवराज के निर्देश के रूप में आपको बता दें कि अभी कुछ समय पहले ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश भर के पुलिस अधिकारियों की बैठक कर उन्हें सख्त निर्देश दिए थे कि प्रदेश में कट्टरता नहीं सही जाएगी। उन्होंने इस बैठक में साफ शब्दों में कहा था राज्य में अवैध रूप से चल रहे उन मदरसों और संस्थानों का रिव्यू किया जाएगा, जहां कट्टरता का पाठ पढ़ाया जा रहा है। मध्य प्रदेश में कट्टरता और अतिवाद बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसलिए राज्य में इस कार्रवाई को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देश पर प्रदेश में कट्टरवादी, अतिवादी व आतंकी संगठनों के खिलाफ लगातार सख्त मुहिम चलाए जाने के रूप में देखा जा रहा है। आतंकी संगठन हिज्ब उत–तहरीर (एचयूटी) के खिलाफ देश में अब तक की ये सबसे बड़ी कार्रवाई मध्य प्रदेश एटीएस ने भोपाल के शाहजहांनाबाद, ऐशबाग, लालघाटी और पिपलानी क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन हिज्ब उत् तहरीर से जुड़े कई सदस्यों को पकड़ने में सफलता प्राप्त की है, जोकि देश की अब तक की इस आतंकी संगठन को लेकर सबसे बड़ी कार्रवाई भी है। राजधानी भोपाल से दस तो राज्य के छिंदवाड़ा जिले से एक सदस्य को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद से पांच सदस्यों को अभिरक्षा में लिया गया है। मप्र पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ यूएपीए **Unlawful Activities**(Prevention) Act-1967) एवं अन्य धाराओं में प्रकरण पंजीब) किया है। भोपाल से गिरफ्तार किए गए संगठन के सदस्यों में यासिर खान29वर्ष निवासी शाहजनाबाद भोपाल (जिम ट्रेनर), सैयद सामी रिजवी 32वर्ष निवासी मेलेनियम हेबिटेट शहीद नगर, भोपाल (कोचिंग टीचर), शाहरूख निवासी जवाहर कॉलोनी ऐशबाग भोपाल (दर्जी), मिस्बाह उल हक29वर्ष निवासी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, ऐशबाग, भोपाल (मजदूरी), शाहिद निवासी जवाहर कॉलोनी, ऐशबाग, भोपाल (ऑटो ड्राइवर), सैयद दानिश अली, निवासी सोनिया गांधी कॉलोनी, ऐशबाग, भोपाल (सॉफ्टवेयर इंजीनियर), मेहराज अली 25 वर्ष निवासी मसूद भाई का मकान, ऐशबाग, भोपाल (कम्प्यूटर टेक्नीशियन), खालिद हुसैन 40वर्ष निवासी बारेला गांव लालघाटी भोपाल, (टीचर और व्यवसायी), वसीम खान निवासी उमराव दूल्हा, ऐशबाग, भोपाल, मोहम्मद आलम 35 वर्ष निवासी नूरमहल रोड, चौकी इमामबाड़ा, भोपाल और करीम निवासी छिंदवाड़ा (प्रायवेट नौकरी) करने वाले हैं जो कि आमजन के मध्य कार्य करते हुए संदिग्ध गतिविधियों को अंजाम दे रहे थे।

ऐसे करते थे प्रशिक्षण, भर्ती और तैयारी

सभी गिरफ्तार गोपनीय रूप से जंगलों में जाकर क्लोज कॉम्बैट ट्रेनिंग कैंप आयोजित कर निशानेबाजी की प्रैक्टिस करते थे। उक्त प्रशिक्षण कैंप में हैदराबाद से आए संगठन के दक्ष प्रशिक्षक द्वारा कैंप में शामिल सदस्यों को ट्रेनिंग दी जाती थी गोपनीय रूप से दर्श (धार्मिक सभा) आयोजित कर भड़काऊ तकरीरें दी जाकर जेहादी साहित्य का वितरण किया जाता था। आरोपियों द्वारा ऐसे नवयुवकों की पहचान की जा रही थी, जो उग्र स्वभाव के हों और उन्हें संगठन के लिए अपनी जान देने में कोई हिचक ना हो। सभी आरोपी आपस में बातचीत करने के लिए डार्क वेब में प्रचलित विभिन्न कम्युनिकेशन ऐप जैसे रॉकेट चौट, श्रीमा एवं अन्य ऐप का उपयोग करते थे, जिनका उपयोग अधिकतर आतंकी संगठन जैसे आईएसआईएस द्वारा भी किया जाता है। यह थी आतंकी संगठन की योजना संगठन की योजना ज्यादा से ज्यादा नवयुवकों को अपने संगठन से जोड़ने और उन्हें हिंदुओं के विरुद्ध जेहाद के लिए तैयार करना है। सदस्यों को संगठन के लिए चंदा एवं संसाधन एकत्रित करने के लिए कहा जाता था। इनकी बड़े शहरों एवं भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में बड़ी घटना को अंजाम देकर लोगों में भय पैदा करने की मंशा थी। इसके लिए संगठन के सदस्यों द्वारा भारत के बड़े शहरों को चिन्हित किया गया था। वे विभिन्न स्थानों पर ड्रोन से टारगेट और क्षेत्र की रेकी करते थे। रेकी के पश्चात क्षेत्र का नक्शा तैयार कर घटना घटित करने की योजना तैयार कर रहे थे।

छिंदवाड़ा में पकड़ा गया HUT का आतंकी, 13 सालों से FDDI में कर रहा नौकरी

छिंदवाड़ा में एटीएस ने हिज्ब–उत–तहरीर का आतंकी गिरफ्तार किया है। भोपाल सहित छिंदवाड़ा में एटीएस की टीम ने बड़ी कार्रवाई की थी। बताया जा रहा है कि पकड़ा गया आरोपी छिंदवाड़ा एफ.डी.डी.आई में बतौर इंजीनियर 13 सालों से जॉब कर रहा था। छिंदवाड़ा में निवास कर रहा अहमदपुर निवासी अब्दुल करीम उम्र 43 वर्ष, ऑपरेटिव बैंक कॉलोनी में साजिद अहमद के मकान में पिछले 9 वर्षों से किराए पर रह रहा था और छिंदवाड़ा के एफडीडीआई में मेंटेनेंस डिपार्टमेंट में HOD के पद पर कार्यरत है।

हिज्ब उत तहरीर संगठन पर लगा है 16 देशों में प्रतिबंध

हिज्ब उत् तहरीर अथवा तहरीक–ए–खिलाफत संगठन का नेटवर्क 60 से अधिक देशों में फैला हुआ है। इस संगठन पर 16 देशों में प्रतिबंध लग चुका है। यह संगठन भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर इस्लामिक शरिया कानून लाना चाहता है। इसके लिए संगठन ने मध्यप्रदेश में भी गुपचुप तरीके से अपना कैडर तैयार करना प्रारंभ कर दिया था। संगठन से जुड़े सदस्यों का उदेश्य नवयुवकों को भारत की वर्तमान शासन प्रणाली इस्लाम विरोधी बताकर संगठन से जोड़ना था। संगठन के सदस्य लोगों को

शेष पृष्ठ–6 पर

सेंट फ्रांसिस आश्रम में बच्चों के नाम पर विदेशी फंडिंग और कन्वर्जन की साजिश

सागर। सेंट फ्रांसिस सेवाधाम आश्रम के निरीक्षण में कई अनियमिता मिली हैं। यहां किशोर न्याय अधिनियमों का उल्लंघन कर बाल गृहों में किशोरियों को बालकों के साथ रखा जा रहा है। बाल गृहों का पंजीयन भी नहीं कराया गया है। इन अनियमिताओं के सामने आने पर जिला प्रशासन व विभागों को कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।

यह बात सोमवार को सेवाधाम आश्रम के निरीक्षण से लौटे राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने कही। उन्होंने आश्रम में मिली अनियमिताओं पर चर्चा करते हुए सरकारी संस्थाओं की कार्यशैली पर भी सवाल खड़े किए। कानूनगो ने कहा आश्रम में चल रही इन संस्थाओं में जो कमियां मिली हैं उनके लिए सरकार के विभाग और संस्थाएं भी जिम्मेदार हैं। सेवाधाम आश्रम प्रबंधन की ओर से बाल गृह के लिए आवेदन लंबित होने की जानकारी दी गई जबकि अधिकारियों ने ऐसे आवेदन की जानकारी से इनकार किया है। जिन बालगृहों में बच्चों को रखा जा रहा है उनमें मूलभूत सुविधाओं का अभाव है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सेवाधाम में नियम विरुद्ध रखे जा रहे बच्चों के कन्वर्जन की साजिश के सवाल पर कहा कई बच्चे आश्रम में 6 साल से भी ज्यादा समय से रह रहे हैं जबकि उनके घर आसपास के कस्बों या नजदीक के जिलों में हैं। इन्हें परिजनों तक पहुंचाया जा सके इसके लिए बाल कल्याण समिति और महिला बाल विकास विभाग ने भी अपना दायित्व निर्वाह नहीं किया। एक बच्चे के दस्तावेजों में उसके परिजन व निवास की जानकारी छिपाई गई जबकि बच्चे ने अपने घर का पता स्वयं बताया है। कुछ दस्तावेज मिले हैं जिनसे आश्रम में रखे जाने वाले बच्चों के नाम पर विदेशों से डश्वलर के रूप में फंड़िंग जुटाने का अंदेशा है। बाल गृह से शराब की बोतल मिलना, फ्रीजर में बड़ी मात्रा में मांस होना और एक लिफाफे में धार्मिक परीक्षा के प्रश्न पत्र मिलने से भी धर्मांतरण की कोशिश का अनुमान लगाया जा सकता है। एक किशोरी के उपनाम को बदला गया है। भूमि को शासन से अनाथ आश्रम के नाम पर लिया गया वहां चर्च मिला है जबकि बाल गृहों की भूमि पर खेती कर उपज ली जा रही है। इन तमाम अनियमिताओं के संबंध में केंद्र व राज्य के अधिकारियों को अवगत कराते हुए जांच कराई जा रही है ताकि कार्रवाई की जा सके।

भड़काकर और हिंसक कार्रवाई कर खिलाफत कायम करना चाहते थे।

सीएम शिवराज ने फिर दोहराया – मंसूबों को हम कभी पूरा नहीं होने देंगे

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी बुधवार एक बार फिर अपनी बात दोहराते हुए कहा है, अशांति फैलाने वाले अराजक तत्वों के मंसूबों को हम कभी पूरा नहीं होने देंगे। देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त हिज्ब–उत–तहरीर (HUT) से जुड़े 11 सदस्यों को मध्यप्रदेश में गिरफ्तार किया गया है। तलाशी में उनके पास से देश–विरोधी, जेहादी व विस्फोटक बनाने का साहित्य बरामद हुआ है। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व जमात–ए–मुजाहिद्दीन बांग्लादेश (JMB) और पीएफआई जैसे संगठनों पर भी मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा कार्रवाई की जा चुकी है। मार्च 2022 में एटीएस द्वारा जमात–ए–मुजाहिद्दीन बांग्लादेश मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया गया था। इस दौरान तीन बांग्लादेशी आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया था। एमपी एटीएस की कार्रवाई के आधार पर देश के अन्य राज्यों में भी कार्रवाई की गई थी। सितंबर 2022 में मप्र पुलिस ने प्रतिबंधित संगठन पीएफआई (PFI) के 22 सदस्यों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की थी। यह कार्रवाई लगातार जारी हैं।

मध्यप्रदेश गौरव सम्मान

सेवा भारती मध्य भारत को महिलाओं एवं बच्चों के क्षेत्र में तथा सरस्वती शिक्षा परिषद को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यो के लिए मध्यप्रदेश गौरव सम्मान से 2022 के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदान किया गया।

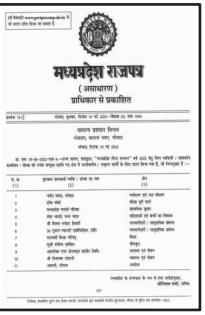
मध्यप्रदेश राजपत्र
(असाधारण)
प्राधिकार से प्रकाशित

अमृत वचन

मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन संतति के लिए नए उत्साह और ओज के साथ काम करने के लिए शीघ्र ही फिर लौट आयेगी

राम प्रसाद बिस्मिल

सुभाषितम्

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।

कुल की भलाई के लिए स्वयं का, ग्राम की भलाई के लिए कुल का, राज्य की भलाई के लिए ग्राम का तथा सर्वात्मभाव के लिए पृथ्वी का त्याग करना चाहिए।

शाश्वत हिन्दू गर्जना में न्यूनतम दर पर
विज्ञापन हेतु संपर्क करें
भूपेन्द्र कटरे- 7898946667

भारत में आपातकाल की भूली-बिसरी यादें

–डॉ. किशन कछवाहा

सन् 1975 का आपातकाल, जिस पर असंख्य पुस्तकें लिखी गयीं। इतिहास का एक काला अध्याय। कांग्रेस द्वारा अध्यारोपित आपातकाल की उस भयावह कालरात्रि का जिसने अनुभव किया है, वह कभी भी उसे भुला नहीं सकता। तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत के इतिहास में चलाया गया यह एक भयानक कुचक्र था। यह सब उस देश में हुआ जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश माना जाता था। यह आज भी यक्ष प्रश्न की तरह उपस्थित है कि आखिर आपातकाल लगाने की क्या जरूरत थी? यह षड़यंत्र क्यों रचा गया? इसे अच्छीत रह समझने की जरूरत है ताकि भविष्य में ऐसा कुअवसर भारत में न आने पाये। कांग्रेस पार्टी ने न इसके लिये माफी माँगी, न ही जनता के सामने इस तथ्य को स्पष्ट किया कि आपातकाल क्यों लगाना पड़ा? बेवजह लोगों को प्रताड़ित किया गया, अनेकानेक घर बरबाद हो गये। यह मामला कितना विलक्षण है कि जिन परिस्थितियों में आपातकाल की घोषणा की गयी थी, जितनी आसानी इसे अहंकारपूर्वक लागू किया गया, वह देश के प्रत्येक नागरिक के लिये खतरनाक परिस्थिति थी। यह लोकतंत्र की मर्यादा को चूर–चूर कर देने वाला अपमानजनक सबक ही कहा जाना उचित होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाकर हजारों स्वयंसेवकों को किया गया गिरफ्तार

एक तानाशाह महिला ने अपनी छुद्र मानसिकता के चलते सारे देश को हथकड़ियों में जकड़ दिया था। इस कदम से भारत के लोकतंत्र की क्रूर हत्या हुयी थी। आपातकाल लगाने का असली मकसद था, इलाहाबाद हाईकोर्ट के 12 जून के फैसले को नापसंद करना। अदालत ने इंदिरा गाँधी का चुनाव अवैध घोषित किया था। वे 6 वर्ष तक चुनाव भी नहीं लड़ सकती थी। सारे देश ने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि यह महिला लोकतांत्रिक होने का ढोंग भर रही थी। पिछलग्गू–छुटभईयों ने शोर मचाना शुरू कर दिया – अदालत का फैसला जो भी हो, इंदिरा गाँधी ही प्रधानमंत्री रहेंगी।

सर्वोच्च न्यायालय भी अप्रभावित रहा और 24 जून 1975 के न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर के फैसले के बाद इंदिरा गाँधी के सामने यह नैतिक सवाल खड़ा हो गया कि वे इस्तीफा दें। उनके इस्तीफे की माँग भी देश भर में जोर पकड़ रही थी। यह साफ हो गया था कि वे प्रधानमंत्री नहीं रह सकती। लोकतंत्र के चारों स्तम्भों व मीडिया पर शिकंजा कस दिया गया। रातोंरात अंधाधुंध गिरफ्तारियाँ हुयी। लाखों लोगों को जेल में ठूँस दिया गया। भारत के संविधान का खुले आम मजाक उड़ाया गया। सारे विपक्षी नेताओं को काल–कोठरी में ढकेल दिया गया। आम जन–जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार छीन लिये गये। गिरफ्तारी से बचे विपक्ष के कार्यकर्ताओं ने दमन और तानाशाही के खिलाफ देश भर में संघर्ष का शंखनाद किया, जगह–जगह आन्दोलन और सत्याग्रह आरम्भ किये गये। पर्चे, पेम्पलेट, पोस्टर रातोंरात पुलिस को भनक न लग सके – इस ऐहतियात के साथ, चिपकाये जाते रहे, ताकि जनता को जागरूक किया जा सके। पुलिस और प्रशासन द्वारा किये दमन और अत्याचारों से जनजन के मस्तिष्क को झकझोर कर रख दिया था। इस आपातकाल ने इस देश के प्रत्येक नागरिक को और सभी राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं को एक अच्छा पाठ पढ़ाया कि लोकतंत्र में व्यक्ति प्रमुख नहीं, दल प्रमुख नहीं, बल्कि राष्ट्र प्रमुख होता है। एक व्यक्ति विशेष की महत्वाकाँक्षा को पोषित करने के लिये राष्ट्रहित को, लोकहित को दाँव पर नहीं लगाया जा सकता।

आपातकाल भारत के प्रजातंत्र के लिये एक काला बदनुमा द ाग था। उन्नीस महीनों की काल अवधि में आजाद का सूर्य ढंका रहा। 25 जून 1975 की आधीरात के बाद से चला दमन और अत्याचारों का कुचक्र 24 मार्च 1977 तक चला था। लोकतांत्रिक व्यवस्थायें रोक रखीं गयी थीं। यह आपातकाल : संवैधानिक आतंक का पर्याय बना रहा। पत्रकारों की कलम बंद। अखबारों पर सेंसरशिप दूरदर्शन और रेडियो तत्कालीन प्रधानमंत्री के भोंपू बना दिये गये थे। यहाँ इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित करना भी आवश्यक है कि 25 जून की रात रामलीला मैदान दिल्ली में जयप्रकाश नारायण जी का भाषण समाप्त हुआ था। रात में ही जे. पी. को गिरफ्तार कर लिया गया। 26 जून को सुबह इंदिरा गांधी द्वारा आकाशवाणी से इमरजेंसी लगाये जाने का समाचार सुना गया। इंदिरा गांधी और उनके कम्युनिष्ट सहयोगियों ने इसे जे.पी. का देश द्रोह तक कहा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर तीसरी बार पाबंदी लगायी गयी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके हिन्दुत्व को एक राजनीतिक विचारधारा बतलाया गया।

आपातकाल की घोषणा से अधिक चर्चित था, लोकतंत्र के नाम पर गत तीस वर्षों में कांग्रेसी शासन के दौरान पनपा अवसरवाद, भृष्टाचार, संकीर्णतावाद। लेकिन भारतीय संविधान के साथ खिलवाड़ करते हुये उसके सभी अंगों और स्तम्भों पर लगातार हमले किये जाते रहे। अनावश्यक संशोधन कर संसद का कार्यकाल भी बढ़ाया गया। न्यायपालिका को तो बंधक बनाया ही, प्रेस का गला भी घोंट दिया गया था। बिजली काट दी गयी, पत्रकार जगत को पंगु बना दिया गया था। पत्रकार प्रधानमंत्री से मिलने पहुंचे तो श्रीमती गांधी ने कहा 'एक कुत्ता तक नहीं भौंका'। कल मिलेंगे यह था उनका अहंकार। उनसे बिना मिले वापिस आ गये। भारत में मानवाधिकार हनन का यह एक चिन्तनीय स्वरूप सामने आया था। आपातकाल की यादें आंखों के सामने जैसे ही आती है, शरीर में सिहरन और लोकतंत्र की हत्या के एक नहीं सैकड़ों उदाहरण साकार होने लगते हैं। कांग्रेसी शासन का यह न भूलने योग्य काला अध्याय था जो 25 जून 1975 को शुरू हुआ था।

स्वास्थ्य चेतना

बरसात के आते ही रखें अपना विशेष ध्यान

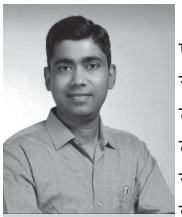

डॉ.वेदप्रकाश लिल्हारे
MBBS जनरल फिजिशियन

जैसे ही गर्मियां खत्म होती हैं मानसून आते ही पेट संबंधी विभिन्न समस्याएं आती है यह समय थोड़ा सा उमस भरा होता है जिसके कारण ही दूषित भोजन एवं दूषित पानी की वजह से पेट एवं आंत संबंधी संक्रमण होने की संभावना रहती है।

इस समय पीलिया, डायरिया, हेपिटाइटिस, कोलाइटिस आदि आदि दूषित पानी या दूषित भोजन के कारण हो सकते हैं। डायरिया इनवेसिव एवं नान इनवेसिव दोनों तरह का हो सकता है ,इनवेसिव डायरिया ज्यादातर बैक्टीरिया के कारण होता है एवं नॉनइनवेसिव डायरिया बैक्टीरिया एवं प्रोटोजोआ दोनों के कारण हो सकता है।

चिकित्सक को कब दिखाएँ – मितली सा लगना, बार बार उल्टी होना ,आंखों में पीलापन आना, पतले दस्त होना, पेट में दर्द होना, पेट में फूलापन लगना, अत्यधिक थकान महसूस करना। बार बार उल्टी होने के कारण या पतले दस्त होने के कारण शरीर में पानी एवं इलेक्ट्रोलाइट की कमी हो जाती है , शरीर में ज्यादा पीलापन होने पर या पेशाब के कम होने पर चिकित्सकीय निर्देश के अनुसार शरीर में पानी एवं इलेक्ट्रोलाइट की कमी को पूरा किया जाता जाता है।

इन परिस्थितियों में दवाओं का सेवन चिकित्सक के निर्देश के अनुसार ही करना चाहिए। कभी–कभी कुछ ब्लड टेस्ट एवं इलेक्ट्रोलाइट्स या किडनी की जाँच की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें डायबिटीज, किडनी की समस्या, लीवर की समस्या है उन्हें शरीर में पानी की कमी होने के कारण डायबीटिक कीटो एसिडोसिस या एक्यूट किडनी इंजरी होने की संभावना ज्यादा रहती है ऐसे रोगी को डायरिया, दस्त या पेट संक्रमण के लक्षण दिखने पर तुरंत ही अपने चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए ताकि होने वाले कश्वम्प्लिकेशन से बचा जा सके। चिकित्सकीय सलाह के अलावा और क्या सावधानी बरतें– साफ पानी का सेवन करें, पानी को उबालकर भी पी सकते हैं, बासा भोजन करने से बचें।

विश्व कीर्तिमान

भारत के विजयवाड़ा के 19 वर्ष के तीरंदाज प्रथमेश जावकर ने नीदरलैंड के विश्व के श्रेष्ठ खिलाड़ी माइक श्लोएसर को उलटफेर का शिकार बनाकर शनिवार को यहाँ विश्व कप तीरंदाजी में पुरुषों के कंपाउंड में व्यक्तिगत वर्ग का स्वर्ण पदक प्राप्त कर भारत का नाम विश्व पटल पर गौरवान्वित किया है। आपने अभी तक 4 स्वर्ण पदक 1 रजत पदक और 2 कांस्य पदक प्राप्त किये है। आपको उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ

बैलगाड़ी से निकली बारात बनी आकर्षण का केन्द्र

जबलपुर का क्षेत्र संस्कारधानी के नाम से जाना जाता है और इस क्षेत्र के पास नागपुर–जबलपुर के बीच में सिवनी जिला है, जहां आज भी संस्कारों एवं रीति–रिवाजों को महत्व दिया जाता है। एक तरफ जहां आधुनिकता के इस दौर में लोग महंगी–महंगी शादियाँ करते हैं। इन शादियों में महंगी–मंहगी गाड़ियों का उपयोग किया जाता है तो कहीं हेलिकाप्टर से दूल्हा दूल्हन लेने आता है। इस युग में संस्कार कम नजर आ रहे हैं पर सिवनी जिले के बरघाट विधान सभा के ताखला कला गां में प्रहलाद राहंगडाले ने अपने बेटे की शादी पूरे

रीति–रिवाज के साथ करने का फैसला किया। इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि वाहन का उपयोग नहीं किया गया बल्कि बैलगाड़ी से बारात दुल्हन लेने पहुंची।

बरघाट विधानसभा के अंतर्गत आने वाले ग्राम ताखला कला (पनवास) निवासी प्रहलाद सिंह राहंगडाले के पुत्र देवेन्द्र राहंगडाले की बारात बीते 11 मई को जा ग्राम उसरी अरी जाने के लिए निकली तो लगभग एक दर्जन बैलगाड़ी और पैदल बाराती बारात के साथ निकल पड़े। खास बात यह थी कि बैलगाड़ियों को बेहद ही आकर्षक ढंग से सजाया गया था, जहां–जहां से यह अनोखी बारात गुजर रही थी बारात देखने के लिए भीड़ उमड़ रही थी । लोगों ने बारात के साथ सेल्फी लिया और वीडियो बनाया। इस बारात में जो बैंड बाजे इस्तेमाल किए गए वह भी पुराने युग के थे। इस बारात को देखकर ब्लेक एंड व्हाइट समय की शादी लोगों को याद आ गई। जो सिर्फ फिल्म में दिखाई जाती है। ग्राम ताखला कला से ग्राम उसरी निवासी प्रीतम सिंह बघेल की पुत्री मनीषा से ब्याह रचाने पहुंची जहां पर वधु पक्ष के द्वारा बारात का भव्य स्वागत किया गया। संपूर्ण मार्ग में बारातियों सहित अन्य ग्रामीणों के द्वारा बैलगाड़ी से निकाली बारात की खूब तस्वीर खिंचवाई और वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। सिवनी जिले में संस्कारधानी के संस्कार आज भी नजर आते हैं। दूसरी और आधुनिक युग में अपनी संस्कृति को बचाने की यह पहल काबिले तारीफ है। तो वही दूसरी ओर आमजन के बीच इस तरह की शादी यादगार बन रही है।

मोदी जी के पैर छूना...

प्रशांत पोळ

इस समय, जब पूरब के एक छोर का छोटा देश, पापुआ न्यू गिनी गहरी निद्रा मे हैं, वहां के एक फोटो ने सारे भारत में जबरदस्त हलचल मचा रखी हैं. सारे समाचार चौनल इसी समाचार को दोहरा रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, Forum for India&Pacific Islands Cooperation (FIPIC) के तिसरे अधिवेशन मे पापुआ न्यू गिनी के पोर्ट मोरेस्बी मे आज शाम को वहा पहुंचे. जापान से निकलने का और पापुआ न्यू गिनी (प्रचलित भाषा मे पीएनजी) पहुंचने का समय कुछ ऐसा था कि सूर्यास्त के बाद मोदीजी वहां पहुंच रहे थे. पीएनजी के शासकीय प्रोटोकाल के अनुसार, रात्रि, सूर्यास्त के बाद वहां शासकीय स्वागत नही किया जाता. **किन्तु** इन सारे प्रोटोकाल को बाजू मे रखकर, पीएनजी के प्रधानमंत्री जेम्स मारापे ने न केवल मोदीजी का शाही और जबरदस्त स्वागत किया, वरन् एयरपोर्ट पर, सबके सामने मोदीजी के पैर छुए..! यह अद्‌भुत है। अभूतपूर्व है। विश्व के इतिहास मे आज तक कभी भी, किसी भी राष्ट्रप्रमुख ने, दूसरे राष्ट्रप्रमुख के पांव सार्वजनिक रुप से नही छुए हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पापुआ न्यू गिनी (पीएनजी) मात्र 1 करोड जनसंख्या का छोटा सा देश है। इससे भी फरक नही पड़ता कि पीएनजी का वैश्विक राजनीति मे बहुत बडा स्थान नही है। फर्क इससे पड़ता है कि वैश्विक राजनीति में मोदी का स्तर जबरदस्त तरीके से बढ़ रहा है। जब मोदी जी कोरोना काल में विश्व के अनेक छोटे–बड़े देशों को वैक्सीन भेज रहे थे, तब इस देश के बुध्दिजीवी उनकी खिल्ली उड़ाते थे। आज वही सब काम आ रहा हैं। कोरोना के भीषण त्रासदी में जब पीएनजी खून के आंसू पी रहा था, उसका पड़ोसी देश चीन जब मुंह फेर रहा था, तब भारत ने इस देश के वैक्सीन के आवश्यकता की पूर्ति की थी। 7 अप्रैल 2021 को भारत ने पापुआ न्यू गिनी को लाखों वैक्सीन भेजे थे। जेम्स मारापे को इस सब का स्मरण था. मोदी जी के पैर छूना यह कृतज्ञता व्यक्त करने का एक छोटा सा प्रयास था। किसी जमाने में, हजार–डेढ़ हजार वर्ष पहले, पुरुषपुर (आज का पेशावर) से पापुआ न्यू गिनी तक हिंदू संस्कृति का साम्राज्य था. पैर छूने की इस छोटी सी घटना ने हमारी उस प्राचीन संस्कृति के धागों को पुनः मजबूत किया हैं.। इस घटना से कुछ ही घंटो पहले, जापान में क्वाड सम्मेलन के समापन के समय, अमेरिका के राष्ट्रपति, जो बाईडेन ने मोदी जी से कहा, आप तो अद्‌भुत लोकप्रिय हो. अमेरिका में आपके कार्यक्रम मे शामिल होने के लिये अनेक बड़ी–बड़ी हस्तियां मेरे से टिकट की व्यवस्था करने के लिये मेरी जान खा रही हैं..!

बदलते भारत का यह जबरदस्त आश्वासक चित्र है...।

पृष्ठ क्रमांक 2 का शेष–

उसके नरेश स्वतंत्र रूप से राज्य कार्य का संचालन कुशलता पूर्वक करते रहे हैं। वीरांगना रानी दुर्गावती पूर्ण स्वतंत्र सत्ता सम्पन्न साम्राज्ञी के रूप में प्रख्यात थी। रामनगर के शिलालेख में उल्लेख मिलता है कि ''रानी दुर्गावती युद्धों के अवसर पर स्वयं गज पर आरूढ़ होकर जाती थी।'' उनकी न केवल वीरता वरन् उनकी प्रजावत्सलता की गाथायें आज भी जन जन में चर्चित है। 'अकबर नामा' में इस तथ्य का उल्लेख मिलता है कि –'रानी ने बाजबहादुर और मियाना अफगानों को परास्त किया था।' रानी का निशाना अचूक था। वे बन्दूक भी चलाती थीं। उनके राज्य की प्रशस्ति के बारे में पंडित गणेशदत्त पाठक ने लिखा है कि ''एक बार रानी ने एक करोड़ सोने की मुहरें दान की थी,'' जिससे उनकी कीर्ति और यश दूर–दूर तक फैल गया था। इस कीर्ति के कारण लोभी आक्रान्ताओं ने बार बार हमले किये होंगे। रानी दुर्गावती के शासन काल तक बड़ी सुन्दर सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था स्थापित थी। यही कारण था कि गढ़ा मंडला की कीर्ति और यश एवं सम्पन्नता अकबर को कचोटती रही। उसने रानी के प्रख्यात सफेद हाथी सरमन की भी माँग की थी, जिसे रानी ने देने से साफ इंकार कर दिया था। इस पर दुबारा अकबर ने आसफखाँ को आक्रमण करने भेजा। उस समय रानी सिंगौरगढ़ के किले में थीं। आसफखाँ दमोह तक पहुंच गया था। इस समय रानी के पास सेना कम थी इसके बावजूद रानी ने रणचंडी की तरह युद्ध किया और 24 जून 1564 को वीरगति प्राप्त की। यह समय मुगलोंके क्रूर अत्याचारों से भरा हुआ था। देश में रहने वाले हिन्दुओं को तीर्थयात्रा के लिये जाने पर भी जजिया 'कर' देना पड़ता था। सनातन धर्म और संस्कृति पर खुले प्रहार हो रहे थे। सनातन धर्मियों को अपमानित किया जाता था। चारों ओर हिन्दू राजपूत भी असहाय स्थिति में स्थान छोड़कर अन्यत्र भागकर जा रहे थे या मुगलों की आधीनता स्वीकार कर रहे थे। मुगलों के अत्याचार चरम पर थे। विश्व इतिहास में इस तथ्य को स्वीकार किया जाता है कि रानी दुर्गावती के शौर्य और बहादुरी की दूर दूर तक चर्चा थी। उन्होंने अपनी कुशल रणनीति से राज्य में अपने विरूद्ध हो रहे अन्याय के विरोध में मुगल साम्राज्यके खिलाफ अस्त्र–शस्त्रों के साथ हमले किया और हमलों का सामना भी किया। वे इतिहास की पहली महिला रानी हैं जिन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुये न केवल सेना का नेतृत्व किया वरन् बलिदान भी दिया। रानी दुर्गावती सोलहवीं शताब्दी की अमर सेनानी वीरांगना रानी थी। जिस तरह रानी ने वीरतापूर्वक अकबर जैसे शक्तिशाली शत्रु से लोहा लिया, वह नारी सशस्त्रीकरण का अनोखा उदाहरण बन गया है। उनके शौर्य और साहस को शत–शत नमन। रानी ने जिस आदर्शपूर्ण जीवन को जिया, वह समाज के लिये, देश के लिये अत्यन्त प्रेरणादायक है। अरानी के बलिदान से भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को एक धधकती चिंगारी मिल गयी, रानी दुर्गावती का देशप्रेम, उदारता, स्वाभिमान, बहुमुखी व्यक्तित्व, साहस आत्मविश्वास सम्पूर्ण मानव जातिके लिये प्रेरणादायक है। जबलपुर शहर में स्थित विश्व के सबसे छोटे किले के रूप में अपनी पहचान समेटे ''मदन महल का किला'' गौंडवाना शासन के दौरान रानी दुर्गावती ने ही बनवाया था। वह किला पहाड़ियों पर ही निर्मित है, कभी इस किले से पूरा शहर एक सुन्दर उद्यान की भाँति नजर आता था। इस किले से पूरे शहर एवं बाहर से आने वाले आक्रमणकारियों पर नजर भी रखी जाती थी।

सेहत के लिये प्राकृतिक चटनियाँ खाइये

भोजन में रूचि जगाने के लिये प्राकृतिक तीरके से चटनियाँ बनायें। इनमें स्वाद तो हो ता ही है, सभी पोषक तत्व भी अपक्वाहार होने से सुरक्षित रहते हैं, जो सेहत के लिये बेहद लाभदायक होते हैं, सभी विटामिन्स एवं खनिज लवणों से युक्त चटनियाँ अपने भोजन में सम्मिलित कर भोजन का स्वाद बढ़ायें। गुड़ तथा आंवला चूर्ण रूचि के अनुसार मिला लें।

टमाटर की चटनी– 100 ग्राम टमाटर, 50 ग्राम धनिया पत्ती, दो हरी मिर्च, 20 ग्राम अदरक तथा स्वादानुसार चमक, जीरा, भुनी हींग मिलाकर पीस लें। यह चटपटी चटनी भूख बढ़ाती है। इससे जठराग्नि तेज होती है।

नारियल की चटनी– कच्चा नारियल 100 ग्राम, धनिया पत्ती 50 ग्राम, दो हरी मिर्च, नमक तथा भुना जीरा, अजवायन स्वादानुसार मिलाकर थोड़ा–सा पानी भी मिला लें, जिससे पीसने में आसानी हो। यह चटनी स्वाद बढ़ाने के लिये तथा स धिवात में लाभदायक है।

मूँगफली की चटनी– मूंगफली के दाने 50 ग्राम ले कर 200 ग्राम पानी में 8 घंटे भिगोकर रखें, तत्पश्चात उसे 50 ग्राम दही, 50 ग्राम धनिया पत्ती, 2 हरी मिर्च तथा भुना जीरा, अजवायर, हींग के साथ पीस लें। चटनी तैयार है।

आंवला की चटनी– 100 ग्राम आंवला (गुठली हटाकर),उसमें धनिया की पत्ती 100 ग्राम, अदरक, हरी मिर्च, नमक, जीरा, अजवायन मिलाकर पीस लें। यह चटनी विटामिन 'सी' से भरपूर है। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाती है।

धनिया की चटनी–धनिया पत्ती 100 ग्राम, मुनक्का 20 ग्राम, 20 ग्राम खजूर, अदरक 10 ग्राम, हरी मिर्च, काला नमक, दही, जीरा, काली मिर्च, अजवायन को स्वादानुसार मिलाकर, पीसकर नीबू का रस मिला दें। यदि आंवला उपलब्ध हो तो आंवला पीसकर मिला दें। यह चटनी पाचक, स्वादिष्ट एवं पित्तनाशक है।

इमली की चटनी– 50 ग्राम पकी हुई इमली की गरम पानी में आधा घंटा भिगो दें, तत्पश्चात खूब मसलकर छान लें। इसमें हरी मिर्च, हींग, जीरा, अजवायन, हरा पुदीना, अदरक एवं गुड़ अपनी रूचि के अनुसार मिला लें। यह चटनी पेचिस के रोगी के लिये बड़ी लाभप्रद होती है।

किशमिश की चटनी– 50 ग्राम किशमिश, 50 ग्राम अनारदाना तथा छुहारा 50 ग्राम 8 घंटे पानी में भिगो कर रखें। छुहारे को गुठली निकाल दें। नारियल 50 ग्राम तथा पुदीना, धनिया, अदरक, काली मिर्च या रही मिर्च तथा नमक स्वादानुसार मिलाकर पीस ले, थोड़ा–सा नींबू का रस मिलाकर चटनी खाइये। यह चटनी एनीमिया दूर कर खून बढ़ जाती है।

अमरुद की चटनी– 10 ग्राम अमरूद, 50 ग्राम अनारदाना तथा 1–2 हरी मिर्च, काला नमक, सफेद नमक स्वादानुसार मिलाकर पीस लें। यह कब्ज निवारक होती है।

पुदीने की चटनी– पुदीने की पत्तियाँ 100 ग्राम तथा 50 ग्राम धनिया पत्ती, 100 ग्राम दही, 2 हरी मिर्च स्वादानुसार नमक मिलाकर पीस लें। यह गैस, अपच को दूर करती है। खजूर की चटनी– खजूर 100 ग्राम, लौकी 50 ग्राम, बंदगो भी 50 ग्राम, अमरुद का गूदा 50 ग्राम (बीच निकाल दें)। जीरा, अजवायन, हरी मिर्च, धनिया, अदरक, नींबू का रस, सेंधा नमक स्वादानुसार मिलाकर पीस लें। यह चटनी कब्ज दूर करती है। रक्तचाप संतुलित करती है तथा हीमोग्लोबिन बढ़ाती है।

सेब की चटनी– 100 ग्राम सेब, 50 ग्राम पत्ता गोभी, 50 ग्राम गाजर, 50 ग्राम टमाटर, 50 ग्राम खजूर एवं अदरक, सेंध नमक, रही मिर्च तथा जीरा, अजवायन भूनकर स्वाद के अनुसार मिलायें। यह चटनी हृदय रोग, उच्च रक्तचाप के रोगी के लिये लाभदायक है।

कच्चे आम की चटनी–कच्चा आम 100 ग्राम, धनिया पत्ती 100 ग्राम, हरा पुदीना 100 ग्राम, अदरक 5 ग्राम,गुड़, 50 ग्राम तथा हरी मिर्च, नमक, जीरा, अजवायन, हींग आदि स्वादानुसार मिलाकर चटनी बनायें गर्मी के दिनों में यह चटनी लाभप्रद हैं।

सम्माननीय पाठक गण, शाश्वत हिन्दू गर्जना पत्रिका के सम्बंध में अपने सुझाव एवं विचार कृप्या इस व्हाट्सएप नम्बर पर अपना पूर्ण परिचय, पता एवं पासपोर्ट साइज फोटो सहित प्रेषित करें।
सुशील बर्मन - 9981326887

बिना दहेज लिये दुल्हे ने घर लाई दुल्हन...

दहेज प्रथा के खिलाफ किसान पुत्र ने कायम की मिशाल

बालाघाट जिले के गाँव कुम्हारी में किसान ने अपने बेटे की शादी में बिना दान दहेज लेकर दहेज लोभियों को नया संदेश दिया है। जहाँ उन्होने शादी में मात्र पाँच बर्तन शगुन के स्वीकार किया है। दो परिवारों में रिश्ते की पहली शर्त भी यही थी कि शादी में लड़की पक्ष से कोई भी दान दहेज देने की जिद्द नहीं करेगा। दरअसल, यह पूरा मामला बालाघाट अंतर्गत ग्राम कुम्हारी निवासी चोबेलाल लिल्हारे के बेटे हंसराज के विवाह कार्यक्रम से जुड़ा है। जिनका लालबर्रा के गांव सेल्वा निवासी स्वर्गीय प्रतापलाल डेहरे की बेटी रोशनी के साथ विवाह हुआ है। जहां दोनो सात फेरे लेकर विवाह के बंधन में बंध चुके है। इस शादी में एक विशेष बात यह रही कि शादी में किसी तरह का दान–दहेज वर पक्ष की तरफ से नहीं लिया गया। जहाँ उनके इस निर्णय की चहुँ ओर ना सिर्फ प्रसंशा हो रही है बल्कि उन्होने समाज व दहेज लोभियों को नया संदेश दिया है।

बता दें कि हंसराज लिल्हारे पेशे से ऑटो रिपेयर है। उनका कहना है कि जब वह लडकी के घर रिश्ते की बात करने गये थे, तभी मैंने पहले ही शर्त रख दी थी कि शादी में किसी भी तरह का दहेज नहीं लेगें। यदि यह शर्त स्वीकार हो, तो ही रिश्ते की बात आगे बढ़ाएंगे। जिसको लेकर समाज में विरोध करने लगें कि दहेज प्रथा समाप्त करने की बात करता रहता है। लेकिन इस बीच परिवार के लोगों ने मेरा साथ दिया और कहा कि तेरा फैसला सही है.. फिर समाज के लोगों को समझाया गया, जिसके बाद सभी शादी के लिए मान गए और शादी भी तय हुई। वही शादी के आमंत्रण कार्ड पर भी संदेश छपवाया गया कि एक कदम दहेज प्रथा के खिलाफ आप सभी जानते हो कि दहेज प्रथा समाज के लिए चिंता का विषय है, फिर भी इसका रूप निरंतर बढ़ते ही जा रहा है। परिणाम स्वरूप आज भी लाखों परिवार इसके कारण तकलीफ से जूझ रहे हैं। अतः आप सभी इसका विरोध करें और दहेज प्रथा बंद करें...मैं इसका विरोध करता हूँ। इस संदेश की खूब चर्चायें हुई और लोगो ने दुल्हे व उसके परिवार की सराहना भी की।

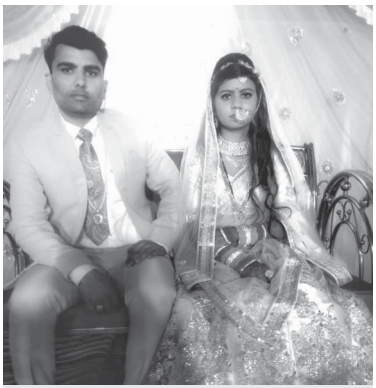

कार्ड में लिखा स्लोगन, एक कदम दहेज प्रथा के खिलाफ, समाज को दिया नया संदेश

हंसराज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक है

सास ने बहु को बनाया आरक्षक...

दमोह। अक्सर सास–बहु में झगड़े होने की बात सुनी होगी और देखा होगा लेकिन सास बहु के बीच माँ–बेटी जैसा प्यार भी होता है। एक सास अपनी बहु को बेटी की तरह आत्मनिर्भर बनाने पीछे नहीं हटती और उसे अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए प्रेरित करती है और उसका सहयोग भी करती है। शहर से सटे मेहता बगीचा में रहने वाले 60 वर्षीय राधारानी राठोर के बेटे रोहित राठौर की शादी फरवरी 2013 में दमोह जिले के पटेरा ब्लाक के बरखेरा बैस गाँव निवासी विमला राठौर के साथ हुई थी। रोहित जिला अस्पताल में वार्ड बॉय के पद पर कार्यरत है और उनकी पत्नी बीए पास है। बहू पढ़ी लिखी होने के कारण सास राधारानी ने भी उसे सरकारी नौकरी में जाने प्रेरित किया और बहू को पुलिस भर्ती की तैयारी शुरू कराई। राधारानी ने बहू को बेटी समझा और उसे अपने पैरों पर खड़ाकरना चाहा, इसलिए वे सुबह और शाम परेड ग्राउंड में दौड़ाने के लिए जातीं। उसे पुलिस भर्ती की तैयारी करने के लिए घर के कामकाज से भी दूर रखा। 2013 में ही बहू विमला पुलिस भर्ती परीक्षा में पास हुई और आरक्षक पद के लिए ट्रेनिंग के बाद खुरई में पोस्टिंग मिली। वर्तमान में वह दमोह जिले के हटा थाना में पदस्थ है। इनकी एक बेटी भी है।

हर दिन खुद ग्राउंड पर लेकर गई

मतांतरण की सूचना पर दबिश, 100 पेटी साहित्य के साथ पांच को पकड़ा

शहडोलः शहडोल में मतांतरण का एक बड़ा मामला सामने आया है जहां दूसरे राज्यों से आदिवासियों को लाकर उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जा रहा था कोतवाली पुलिस को शनिवार को शहर के वार्ड नंबर–18 घरौला मोहल्ला में मतांतरण कराने की सूचना मिली थी। पुलिस ने बंद कमरे से लगभग 100 पेटियों में रखीं ईसाई धर्म से संबंधित किताबें जब्त की हैं। यहां से बालाघाट के एक पास्टर सहित पांच लोगों को पुलिस ने पकड़ा है, जो धर्म का प्रचार कर रहे थे। बंद कमरे में करीब 40 लोगों को बैठाकर उन्हें ईसाई धर्म के बारे में समझाया जा रहा था। यहां शहडोल, उमरिया, अनूपपुर जिले के अलावा छत्तीसगढ़ के गरीब आदिवासी थे। कई ऐसे गरीब थे, जिन्हें बीमारी का इलाज कराने के बहाने बुलाया गया था।

बजरंग दल को दी थी सूचना – दरअसल मोहल्ले में रहने वाले संस्कार निगम ने बजरंग दल के पदाधिकारियों को इसकी सूचना दी थी। उनका कहना था रौनी नय्यर के घर में लंबे समय से कुछ लोगों का आना जाना हो रहा है और यहां प्रार्थना सभा हो रही है। शनिवार को भी यहां कई लोग इकट्ठा हुए और बाहर से दरवाजा बंद कर ताला लगा दिया गया। बजरंग दल के कार्यकर्ता पुलिस के साथ वहां पहुंचे तो काफी देर बाद दरवाजा खुला। मोहल्ले के लोगों ने पुलिस के बताया कि लंबे समय से यहां लोग आ रहे हैं। सब गरीब और भोल भाले लोग हैं, जिन्हें बरगलाया जा रहा है।

विधायक के पिता ने किया देहदान , रीवा में सौंपी देह

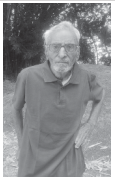

रीवा। मऊगंज विधायक प्रदीप पटेल के पिता छोटेलाल पटेल का भोपाल के एम्स अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया, वे 89 वर्ष के थे एवं लम्बे अर्से से बीमार चल रहे थे। स्व. छोटेलाल पटेल कृषि विभाग में विषय वस्तु विशेषज्ञ के पद से 1996 में उमरिया से सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने उमरिया के अलावा सतना जिले रउरा फार्म, अमरपाटन एवं मझगवां में भी लंबे समय तक अपनी सेवाएं दी थीं। श्री पटेल के निधन की खबर लगते ही सतना और रीवा में उनके शुभचिंतकों के बीच शोक की लहर दौड़ गई है। विधायक प्रदीप पटेल ने मीडिया को बताया कि उनके पिताजी की अंतिम इच्छा मरणोपरांत नेत्रदान समेत अन्य अंगों को दान करने की थी। उन्होंने बताया कि इस संबंध में जब एम्स के चिकित्सकों से बात की गई तो उनका कहना था कि शरीर का कोई भी अंग किसी अन्य व्यक्ति को प्रत्यारोपित नहीं किया जा सकता, इसके एवज में देहदान की प्रक्रिया की जा सकती है। ऐसे में उनकी अंतिम इच्छा को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय किया गया कि रीवा मेडिकल कालेज में देहदान कर मेडिकल के छात्रों की पढ़ाई के लिए पुण्य का कार्य किया जाए।

प्रेरक प्रसंग

श्री गुरु जी का अदम्य साहस

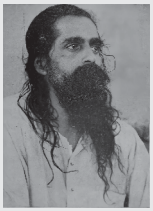

परम पूजनीय श्री गुरुजी ने संघ कार्य का देश भर में विस्तार किया। रेलगाड़ी का डिब्बा ही उनका घर था। एक बार आप कम्युनिस्टों के गढ़ केरल में गये। वह संघ–कार्य का प्रबल विरोध था। खुले मंच पर श्री गुरुजी स्वयंसेवकों को संबोधित करने के लिए जैसे ही खड़े हुए तभी पीछे कुछ हलचल हुई।रक्षा में नियुक्त स्वयं सेवा सतर्क हुए और अपने स्थान पर खड़े हो गए। गुरुजी ने उन्हें अपने स्थान पर बैठ जाने का निर्देश दिया। भाषण प्रारम्भ हुआ। थोड़ी ही देर पश्चात एक नुकीला पत्थर गुरुजी के सिर पर आ लगा। फिर से रक्त बहने लगा। सिर पर चोट की परवाह न करते हुए श्री गुरुजी ने भाषण देना चालू रखा। वाणी में वही क्रम, ओज तथा शब्द– चित्र। उन्होंने बीच में कहा– मैंने अपने जीवन राष्ट्र को समर्पित किया है। यदि मेरे देशवासियों को मेरे रक्त से संतुष्टि होती है तो मैं उसके लिए सहर्ष तैयार हूँ

यह कह कर उन्होंने अपने दोनों हाथ आगे फैला दिये। सभा–स्थल पर सन्नाटा छा गया। उस समय उपस्थित सभी जन अपने सम्मुख साक्षात बुद्ध और गांधी के दर्शन कर रहे थे। कुछ समय पश्चात् पत्थर फेंकने वालों में से अनेक बंधु संघ के स्वयंसेवक बन गये। उनमें से कुछ तो संघ के प्रचारक भी हैं।

यह है अदम्य साहस तथा ध्येय समर्पण–भाव का सुपरिणाम।

स्मरणीय दिवस जून 2023

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव	–	02 जून
थियान मेन चौक नरसंहार	–	04 जून
संत कबीरदास	–	04 जून (जयंती)
विश्व पर्यावरण दिवस	–	05 जून
बिरसा मुंडा	–	09 जून (बलिदान दिवस)
राम प्रसाद बिस्मिल	–	11 जून
विश्व रक्तदान दिवस	–	14 जून
गोवा क्रान्ति दिवस	–	18 जून
रथ यात्रा जगन्नाथ पूरी	–	20 जून
योग दिवस	–	21 जून
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी	–	23 जून बलिदान दिवस
वीरांगना रानी दुर्गावती	–	24 जून (पुण्यतिथि)
दामोदर हरी चापेकर	–	24 जून (जयंती)
स्वामी सहजानंद सरस्वती	–	26 जून (पुण्यतिथि)
महाराजा रणजीत सिंह	–	27 जून (पुण्यतिथि)
राजेंद्र नाथ लाहिड़ी	–	29 जून (जयंती)
लक्ष्मी बाई केलकर	–	28 जून (जयंती)

गोंडवाने की महारानी

अर्जुन साय

भरत भूमि के हर जुबान पर, दुर्गावती का नाम है।
गोंड़वाने की महारानी माता, बारम्बार प्रणाम है।।
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम ।। ध्रु.।।
वीर पिता की वीर लाड़ली, देवी दुर्गा की अवतार।
धनुष बाण और तेगाबाजी, थे तेरे प्रिय खिलवार ।।
सुकुमारी पर सुकुमारी नहीं, करती हिंसक पशु शिकार।
भय को तुमसे भय लगता था, देख तुम्हारे अचूक प्रहार ।।
कालिंजर की राजकुमारी, गढ़ मण्डला की शान है।
गोडवाने .....।।1 ।।
बाल्यकाल में युद्ध कला की, शिक्षा तुमने थी पायी ।
घुड़सवारी गजारोहण की, अद्वितीय निपुणता पायी ।।
इकलौती संतान पिता की, पाया सभी का प्यार ।
स्वाभिमानी प्रजाहितैषी, सद्गुणों की थी भंडार ।।
तैराकी कला में माहिर, अब भी नर्मदा करती गान है।
गोंडवाने.....।।2 ।।
कृष्ण रूक्मिणी सम परिणय सूत्र में,
बंध गए दुर्गा दलपतशाह ।
बजी शहनाई सिंगौरगढ़ में, जन–मन में भर नव उत्साह ।।
न भूतो न भविष्यतीति, दुर्गा बनी अब महारानी
भारतीय इतिहास पृष्ठ में, लिख गई अमर कहानी ।।
वन–पर्वत हर ग्राम में गूंजे, केवल एक ही नाम है।
गोंडवाने..... ।।3 ।।
वीर नारायण पुत्र को पाकर, माता बनी महारानी ।
स्वीकार विधाता को क्या जाने, कौन होय अनहोनी ।।
उधर शेरशाह हमला बोला, कालिंजर का पतन हुआ।
पिता युद्ध में काम आ गये, इधर पति का निधन हुआ।
पाँच बरस के भीतर–भीतर, हाय खड़ा ये संकट है।
गोंडवाने ..... ।। 4 ।।
राजसिंहासन सौंप पुत्र को, स्वयं सियासत संभाली।
बाजबहादुर हो या अकबर, दुर्गा बन गई काली ।।
आखिर भारी सैन्य साथ ले, आसफखाँ फिर आया ।
बाजी जीत की हार बन गयी, अंत समय रानी का आया ।।
जीवित शत्रु के हाथ नहीं, खंजर से निज प्राण लिया।
मृत शरीर न पाये दुश्मन, गिर सरमन शव को छिपा लिया ।।
माता मर कर हो गई अमर, ये युगों–युगों की आन है।
गोंडवाने..... ।। 5 ।।

मध्य प्रदेश में नहीं चलेगा कन्वर्जन का कुचक्र, लव जिहाद बर्दाश्त नहीं : शिवराज सिंह चौहान...

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मप्र की धरती पर आतंक की कोई जगह नहीं है। मप्र में धर्मांतरण का कुचक्र नहीं चलेगा, लव जिहाद बर्दाश्त नहीं होगा। पहले सिमी को खत्म किया उसके बाद डकैत और नक्सलियों को भी खत्म किया है। नक्सली अब सिर्फ छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र तक ही सीमित रह गए हैं। मुख्यमंत्री चौहान ने यह बातें रविवार को स्मार्ट सिटी पार्क में पौधरोपण के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए कही।

मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि आंतकी संगठन हिज्ब – उत–तहरीर की सक्रियता देखकर एटीएस ने कारवाई की है। इनका नेटवर्क ऐसा है, लव जिहाद करो फिर बेटी से शादी कर उसका कन्वर्जन करो और उस बेटी को आतंकी बना दो। कहा कि हम लव जिहाद बर्दाश्त नहीं करेंगे, मप्र को केरल स्टोरी नहीं बनने देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश की धरती पर आतंक को कोई जगह नहीं है। जैसे ही जानकारी मिली कि कट्टरपंथी, इस्लामिक संगठन हिज्ब–उत–तहरीर प्रदेश– में सक्रिय हो रहा है, हमारे एटीएस ने तुरंत कार्रवाई प्रारंभ की। एटीएस को निर्देश भी दिए कि ऐसी गतिविधियां किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएंगी, इन्हें जड़ से समाप्त करना है। हम मध्य प्रदेश को किसी भी कीमत पर हम केरल स्टोरी नहीं बनने देंगे। लव–जिहाद, मतांतरण यह कुचक्र नहीं चलेगा। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि एटीएस और केंद्रीय एजेंसियों ने संयुक्त रूप से 10 लोगों को भोपाल से पकड़ा एक छिंदवाड़ा से पकड़ा गया है, उनसे पूछताछ जारी है। पूछताछ में खुलासा हुआ है कि रायसेन की जंगलों में ट्रेनिंग करते थे। सभी प्रोफेशनल थे जो समाज की भोली–भाली बेटियों से उनकी शादी करना और धर्म परिवर्तन करना जैसे गैरकानूनी काम करते थे। अब आने वाले समय में इन पर आगे और बड़ी कार्रवाई हो सकती है। मध्यप्रदेश की धरती पर ऐसे गैरकानूनी कामों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने पहले भी सिमी के नेटवर्क को ध्वस्त किया है। चंबल से डकैतों के आतंक को समाप्त किया है। नक्सलवाद छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा तक सीमित रह गया है। पिछले साल हमने 8 नक्सलियों को मुठभेड़ में मारा है।

उमरिया में मिल्टन कंपनी की पानी बोतल की तरह बनती है मिट्टी की बोतलें

गर्मियों में मिट्टी की बॉटल में रहता है पानी शीतल

जिले के चंदिया के कुम्हारों के द्वारा देश की नामी मिल्टन कंपनी जैसे पानी के बॉटल की जगह सस्ते मिट्टी के बॉटल तैयार किए जाते है। जिसमे गर्मियों के समय मिट्टी की बोतलों में पानी बिल्कुल शीतल रहता है। यहां के कुम्हार अपनी हाथों की कला और अपनी हुनर से इसे बनाते है और जिले सहित देश और प्रदेशों में सप्लाई करते है। इसी के साथ इनके द्वारा बनाई गई सुराही पूरे देश में प्रसिद्ध है। गर्मी का सीजन आते ही प्रदेश के कटनी, जबलपुर, शहडोल, रीवा, उमरिया तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, रायपुर जैसे शहरो मे चंदिया के कुम्हारों द्वारा तैयार किए गए घड़े, सुराही, मिट्टी के खिलौने, कप, केटली आदि विक्रय हेतु उपलब्ध रहते हैं।

जिला प्रशासन के द्वारा चंदिया के मिट्टी कला को आगे बढ़ाने हेतु लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। विगत वर्ष 50 मिट्टी का कार्य करने वाले कुम्हार जाति के लोगो को माटी हस्त कला बोर्ड के माध्यम से प्रशिक्षण दिलाया गया था। उन्हें मिट्टी की कलात्मक वस्तुएँ तैयार करने हेतु आवश्यक उपकरण भी वितरित किए गए। चंदिया के इन्हीं मिट्टी के कारीगरो में से राम प्रसाद प्रजापति ने जनसुनवाई के दौरान कलेक्टर डॉ.कृष्ण देव त्रिपाठी को ग्रीष्म काल में पानी को ठण्डा रखने हेतु मिल्टन कंपनी के बोतल की तरह मिट्टी से बने बोतल उपहार मे भेंट किया। उन्होने बताया कि चंदिया के मिट्टी से बने पानी की बोतल काफी लोकप्रिय हो रही है। इसका कारण बोतल की कीमत कम होना तथा गुणवत्ता अधिक होना है। उन्होने बताया कि मिट्टी के बोतल की कीमत मात्र 100 रूपये है। अब इन बोतलो की चंदिया की सुराही की तरह प्रदेश के विभिन्न जिलों तथा अन्य प्रदेशों से भी माँग आने लगी है। राम प्रसाद प्रजापति ने इस कार्य को व्यवसाय रूप देने हेतु 10 कुम्हार परिवारों का समूह तैयार कर व्यवसायिक इकाई प्रारंभ करने की योजना बनाई है।

11 छात्रों को मिला प्रवेश, न कोचिंग ली, न ही कोई अतिरिक्त क्लास लगाई और कर दिया कमाल

जनजातीय अंचल के सरकारी स्कूल के बच्चों का जेइइ में हुआ चयन

जेइइ परीक्षा में छिंदवाड़ा के जनजाति अंचलो में संचालित सरकारी स्कूल के बच्चों ने बाजी मारकर नया इतिहास रच दिया है। दरअसल हर्रई, छिंदवाड़ा, जुन्नारदेव और बिछुआ के जनजाति आश्रम में पढ़ रहे इन बच्चों ने काफी मेहनत और लगन से अपना लोहा मनवाते हुए जेइइ की प्रवेश परीक्षा में चयनित हुए है जो अपने आप में किसी मिशाल से कम नही है। जानकारी के मुताबिक कुल 11 छात्र छात्राओं का इस परीक्षा में सिलेक्शन किया गया है, जिसको लेकर शिक्षा विभाग में खुशी की लहर है। आपकों जानकार आश्चर्य होगा कि इन बच्चों को ना तो कोई एक्सट्रा क्लास की सुविधा मिली और ना ही इन्होंने कोई अलग से कोचिंग की, यह सभी आदिवासी विभाग के द्वारा संचालित छात्रावास में रहकर जेइइ परीक्षा में भाग लिया और उत्तीर्ण भी हो गए है।

ट्रायबल ए.सी. बोले–हमारे लिये गौरव की बात–जिले का नाम किया रोशन इस सबंध में एसी ट्रायबल सत्येंद्र मरकाम ने बताया कि कुल 11 छात्रों का इस परीक्षा में चयन किया गया है जो हमारे लिए गौरव की बात है। एसी के मुताबिक परीक्षा में एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय सिंगारदीप के तरूण कुमार अहिके, अखिलेश ककड़ीया, श्याम उईके, पवन भारती, मंगल सिंह उईके, गुंजा, दीपिका भलावी व जयदेव उईके, शासकीय कन्या शिक्षा परिसर छिंदवाड़ा की छात्रा रीतू, श्री नंदलाल सूद शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय जुन्नारदेव के छात्र वेदव्यास आम्रवंशी और शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हर्रई के छात्र आशीष चिचलवार का नाम शामिल हैं।

वक्तव्य

नरेन्द्र मोदी
(प्रधान मंत्री)

पड़ोसी देशों के साथ भारत के सामान्य और द्विपक्षीय संबंधो के लिए सीमा पर शांति आवश्यक है। भारत हमेशा पाकिस्तान के साथ सामान्य पड़ोसी जैसे संबंध रखना चाहता है । लेकिन ये पाकिस्तान पर निर्भर करता है कि वह इसके लिए आतंकवाद एवं शत्रुता की भावना से मुक्त वातावरण बनाए। आतंक और संवाद दोनों साथ–साथ नहीं चल सकते।

गजेन्द्र सिंह शेखावत
(केंद्रीय मंत्री)

पाकिस्तान में उनकी जान को खतरा था! वजह हिंदू होना था। आजादी के अमृतकाल में उन्हें गुजरात में भारत की नागरिकता मिली। लेकिन राजस्थान में उनके आसरे पर बुलडोजर चल गया, वजह हिंदू होना है। कांग्रेस की सोच पाकिस्तानी कट्टरपंथियों से कितनी मिलती है!

वदतु संस्कृतम्

मनोज पाण्डेय संस्कृत भारती

संस्कृत		हिन्दी
हरिः ओम! कथम् अस्ति भवान् ?	–	नमस्ते ! आप कैसे हैं ।
अहं सम्यक अस्मि।	–	मैं ठीक हूँ ।
एषु दिनेषु भवतः दर्शनमेव नास्ति।	–	इन दिनों आपके दर्शन ही नही हो रहे हैं।
एषु दिनेषु बहु कार्यव्यस्तः अस्मि।	–	इन दिनों कार्य में बहुत व्यस्त हूँ।
कुत्र असीत् भवन् एतावन्ति दिनांनि ?	–	कहाँ थे आप इतने दिनों ?

पहेली - 2

मुगलों की सेना भी जिससे,
थर–थर–थर थर्राती थी।
तेज (भवानी) रण में जिसकी,
अरि को काट बिछाती थी।
ज्येष्ठ शुक्ल तेरह को वह,
हिन्दू पद पादारूढ़ हुआ।
अफजल का वध करने वाला,
मां का कौन सपूत हुआ ?

पहेली - 1 का उत्तर - स्वातंत्र्य वीर सावरकर

जय हिन्द जय भारत

युवाओं की प्रगति के खुलते द्वार

मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना

संदीप कुमार कुलस्ते
(बीजाडांडी वाले)

शैक्षणिक योग्यता	स्टायपेंड (प्रतिमाह)
12वीं उत्तीर्ण	8000 रुपये
आईटीआई उत्तीर्ण	8500 रुपये
डिप्लोमा उत्तीर्ण	9000 रुपये
स्नातक उत्तीर्ण या उच्च	10,000 रुपये

योजना के तहत विभिन्न 700 से अधिक क्षेत्रों में युवाओं को दक्ष कर उन्हें मिलेगा प्रतिमाह 10 हजार रुपये तक छात्रवृत्ति

पताः– ग्राम– दगला, ब्लॉक– बीजाडांडी,तहसील नारायणगंज, जिला – मंडला

सभी कोर्स की पूरी सूची देखने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें

सम्पर्क सूत्र - 6265690173, 9479864940

kulste shanta sandeep

विधानसभा निवासी क्रमांक 106 (म.प्र.)

EKLAVYA UNIVERSIT
ज्ञानप्राप्तये लक्ष्यसन्धानम्
Sagar Road, Damoh (MP) India
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapana Avam Sanchalan) Adhiniyam 2021, estd. Sept. 2020 and Reinstated, 30th March 2021, No. 184
•Registered under UGC 2(f)/12(b) Act 1956
COURSES APPROVED

Admission Open for 2023-24

Ph.D. Masters, Bachelor, Diploma & Certificates in

Engineering, Computer Science, Basic and Applied Sciences, Forensic Science, Agriculture, Library Science, Management, Education, Physical Education, Commerce, Nursing, Paramedical Sciences, Fashion Design, Social Work, Performing Arts, Fine Arts, Arts & Humanities, Yoga/Naturopathy

Notifications will soon be issued for Full Time/ Part Time Ph.D. Entrance Examination in all the subjects.

Applications are invited for the following posts

- Deputy & Asst. Registrars
- Dean Academics
- Dean Student Welfares
- Dean Research
- Director Admissions
- Proctor
- Administrator
- Training & Placement Officer
- Computer Operators
- Office Executives
- Counsellors
- Admission Officers
- Private Assistance
- Purchase Executives
- HR Managers
- Accounts & Finance Executives

Professor, Associate Professor, Assistant Professor in
- Management
- Commerce
- Education
- Physical Education
- Library Science
- Journalism
- Agriculture
Agronomy, Horticulture, Soil Science, Genetics & Plant Breeding (GPB), Plant Pathology, Seed Technology, Agricultural Extension & Communication
- Naturopathy & Yogic Sc.
- Nursing
Child Health, Mental Health, Obstetrics & Gyanecology, Community Health, Medical, Surgical
- Paramedical Sciences
- History
- Geography
- Sociology
- Economics
- Political Science
- Psychology
- Hindi Lit.
- English Lit.
- Sanskrit Lit.
- Jain & Prakrit
- Philosophy
- Zoology
- Botany
- Chemistry
- Physics
- Mathematics
- Microbiology
- Biochemistry | Biotechnology
- Forensic Science
- Computer Application
- Design
Fashion Design
- Fine Arts
Drawing & Painting, Sculpture, Applied Arts
- Performing Arts
Vocal Music, Swar Vadya, Sugam Sangeet, Kathak, Bharatnatyam, Oddisi
- Engineering
Civil, Mechanical, Electrical & Electronics, Computer Science, Electronics & Comm.

Walk-in interview on Sunday, 4 June 2023, at university campus

- Qualifications and experience as per UGC norms. Salary as negotiated.
- University reserves the right, not to fill any of the above positions.
- Aplication on plain paper containing details of High School, Intermediate, Graduation, Post Graduation, Ph.D. along with attested photocopies of testimonials/ Certificates with complete Resume and two passport size photographs should reach the Registrar or e-mail (hr@eklavyauniversity.ac.in) within 7 days of the publication of this advertisementt. or Contact : 7987358612 (HR)

YOUR Future Choice
विषय का चयन भविष्य की दिशा तय करता है....
अपने भविष्य को सही दिशा दें...

www.eklavyauniversity.ac.in | email: info@eklavyauniversity.ac.in
7999589970 | 9753040755 | 7987358612
Stay Connected
हमसे जुड़े रहें

पर्यावरण और मानव जीवन

संजय स्वामी

ईश्वर की व्यवस्थाएं नियमबद्ध है – नैसर्गिक है, निरंतर गतिशील है। निर्बाध चल रही है। परंतु, मनुष्य अपनी जिम्मेदारी के प्रति बेहद लापरवाह है। ब्रह्मांड का सर्वश्रेष्ठ प्राणी अपने क्रिया–कलापों से पर्यावरण को क्षति पहुंचा रहा है। वह विविध प्रकार का प्रदूषण फैला रहा है। अधिकाधिक कूड़े–कचरे का उत्पादन कर गंदगी के पहाड़ निर्मित कर रहा है। कचरा उत्सर्जन में योगदान स्वयं का है और प्रबंधन का दोष दूसरों के सिर मढ़ रहा है। सरकार ने नगरों– महानगरों के कचरे के निस्तारण का पुनीत कार्य सरकारी एजेंसियों को सौंप, व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी स्वयं ले कर नागरिकों को लापरवाह बना दिया है।

साक्षरता की दर तो आंकड़ों में काफी बढ़ गई है परंतु शिक्षित कितने हुए ? अनपढ़ों की तुलना में पढे-लिखों के कारण पर्यावरण अधिक प्रदूषित हो रहा है।

साक्षरता की दर तो आंकड़ों में काफी बढ़ गई है परंतु शिक्षित कितने हुए ? अनपढ़ों की तुलना में पढे–लिखों के कारण पर्यावरण अधिक प्रदूषित हो रहा है। अनपढ़ तो आज भी सड़क पर झाड़ू लगा, कचरा बुहार रहा है। वह शहर को साफ करने तथा स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दे रहा है। आपके घरों से कचरा बीन स्वावलंब ने का मंत्र चरितार्थ कर रहा है। आपकी कारों को प्रतिदिन सुबह कपड़ों से झाड़ रहा है। कम पानी में आपके वाहनों की धुलाई सफाई कर रहा है। परंतु, पढ़ा लिखा मनुष्य मोटर पंप चला पाइप से सैंकड़ो लीटर पानी कुछ ही मिनटों में बहाकर अपनी कार–बाइक की धुलाई करता है। अब आप ही निर्णय कीजिए की वास्तव में पढ़ा–लिखा समझदार कौन है?

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में अब पर्यावरणविदों, पर्यावरण–प्रेमियों के साथ–साथ शिक्षक, विद्यार्थी तथा आम जन भी मनाने लगे हैं। सरकारें भी अपने स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करती हैं। धीरे–धीरे पर्यावरण व प्रकृति के संरक्षण के प्रति एक सकारात्मक समझ विकसित होने लगी है। पिछले कई दशकों तक जिस प्रकार मानव ने अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाते हुए प्रकृति प्रदत्त चीजों का अधिकाधिक दोहन किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि प्राकृतिक संसाधन धीरे धीरे सिमटने लगे। कृषि तथा उद्योगों के लिए अंधाधुंध जंगलों को काटा गया। जनसंख्या के साथ साथ मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ी। परिणाम भवन निर्माण, फर्नीचर, शहरीकरण, राजमार्ग – महामार्गो आदि के लिए अधिकाधिक वृक्षों का कटान हुआ।

इसी प्रकार जनसंख्या बढ़ने के कारण जल की अधिकाधिक आवश्यकता होने लगी। जल की आवश्यकता मात्र पीने भर के लिए या दैनिक क्रियाओं के लिए ही नहीं होती, अपितु भवन निर्माण, उद्योगों, कृषि आदि के लिए बहुत अधिक मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। विडंबना यह है कि मनुष्य ने अपनी जरूरतों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान दिया परंतु नदियों, तालाबों, झीलों के संरक्षण की भारतीय परंपरा को भूल गया तथा औद्योगिक दूषित जल को जीवन दायिनी नदियों, झीलों में निस्तारित करने का अविवेकी कर्म किया। मनुष्य के नासमझी का परिणाम यह हुआ कि जल के स्रोत दो प्रकार से संकटग्रस्त होने लगे – प्रथम, जल के अधिकाधिक दोहन से स्रोत कुएं, तालाब, नदियां आदि सूखने लगे तथा द्वितीय, जल के स्रोत प्रदूषित होने लगे। वैज्ञानिकों का अनुमान कि अगले कुछ वर्षो के लिए ही जल बचा है। यह समाज के लिए चेतावनी है।

सीमा से अधिक जल के प्रदूषित होने के कारण जलीय जीव व वनस्पति भी संकट में आ गए हैं। उनका अस्तित्व खतरे में है।

पर्यावरणविदों का अनुमान है कि नदियों में कचरा बहाने से सागर, महासागर भी प्रदूषित होते जा रहे हैं। एक शोध से पता चला है कि समुद्र के एक वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में लगभग बयालीस हजार पॉलिथीन तैरती है। पर्यटकों की अज्ञानता और लापरवाही से कचरा बढ़ता जा रहा है। जल–कोल्ड ड्रिंक की खाली बोतलें, डब्बे, ठोस कचरा समुद्र की सतह पर जमा होता जा रहा है। यही स्थिति रही तो अगले कुछ वर्षो में समुद्र में मछलियां कम होंगी कचरा अधिक होगा।

पर्यावरण दिवस महज औपचारिकता न बने अपितु कुछ ठोस संकल्पों के साथ हम पर्यावरण दिवस, पर्यावरण सप्ताह, पखवाड़ा मनाएँ। वृक्षारोपण करें तथा वर्ष भर उनकी देखभाल का भी संकल्प लें। जीरो वेस्ट तकनीकी की ओर बढ़ें। आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ तो ऑक्सीजन, जल, प्राकृतिक संसाधन छोड़ कर जाएं। धरा को जीवन दें। यह वसुंधरा हम सभी की माँ है। इसे सजाने–संवारने का कार्य प्रकृति व पर्यावरण के घटक पेड़–पौधे, नदियां, पहाड़, ऋतुएं आदि पर निर्भर है। सच में इस पृथ्वी को प्राकृतिक स्वर्ग बनाने में हम भी अपना अपना योगदान दें।

अरहर उत्पादन की धारवाड़ पद्धति (रोपण विधि)

सूर्यकांत नागरे
(कृषि वैज्ञानिक)

उत्पादन के उपरोक्त सीमांतकारी कारकों को ध्यान में रखते हुए अरहर की खेती 90 से 100 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में किया जाना चाहिए तथा भूमि में उचित जल निकास का प्रबंध होना चाहिए। अरहर में विपुल उत्पादन हेतु धारवाड़ पद्धति (रोपण विधि) इजाद की गई है जिसमें बीज दर काफी कम होती है एवं धारवाड़ पद्धति से अरहर लगाने में पौधों को पर्याप्त दूरी मिलने से पौधों में शाखाएं अधिक आती है तथा फूल–फल अधिक आते हैंजिससे उत्पादन अधिक मिलता है। पौधों को मेंड़ पर लगाने से कम वर्षा की स्थिति में नाली को दोनों सिरों से बंद कर जल को खेतों में रोका जा सकता है एवं अधिक वर्षा की स्थिति में नालियों को खोलकर पानी को खेत के बाहर निकाला जा सकता है जिससे फसल गलती नहीं है। उक्त विधि से उगाई गई फसल मध्य नवम्बर से 15 दिसम्बर तक पककर तैयार हो जाती है जिससे पाले से फसल बच जाती हैं एवं रबी की फसल की बुवाई का कार्य भी समय से किया जा सकता हैं। उक्त विधि द्वारा अंतरवर्ती फसलों के साथ अरहर की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

रोपण हेतु अरहर की प्रजातियाँ एवं अवधि : उकठा रोधी एवं बंध्यता मोजेक रोग के प्रतिरोधक क्षमता वाली प्रजातियां जिनकी अवधि 140 से 180 दिन हो, रोपण हेतु उपयुक्त होती है।

बीज दर एवं बीज उपचार: रोपण विधि में बीज की मात्रा 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। बीज को कवकनाशी दवा कार्बेण्डाजिम या थायरम 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके राइजोबियम कल्चर एवं पी.एस.बी. कल्चर 10 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

नर्सरी की तैयारी व समय– नर्सरी हेतु 6"3" या 5" 3 इंच आकार की छिद्र युक्त पॉली बैग लेकर इसमें छनी हुई मिट्टी एवं सड़ी हुई गोबर की खाद समान मात्रा में भरकर इन्हें छायादार स्थान पर रख दें। 15 से 20 मई तक इनमें उपचारित बीज के 1 से 2 दाने की बुवाई करें एवं आवश्यकता अनुसार प्रतिदिन सिंचाई करते रहे। 25 से 30 दिन की नर्सरी होने पर इनकी रोपाई कर देनी चाहिए।

खेत की तैयारी एवं रोपण– ग्रीष्म ऋतु में खेत की गहरी जुताई करें ताकि खरपतवार के बीच, कीड़ों के अंडे, लार्वा आदि नष्ट हो जाए। रोपाई से पूर्व गोबर की खाद 4 से 5 टन अथवा केंचुआ खाद 2 से 2.5 टन प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। यदि संभव हो तो पौध रोपण मेड़ों पर करें ताकि अधिक अथवा कम वर्षा से फसल प्रभावित ना हो।

पौध ज्यामिति एवं अंत: फसल– नर्सरी से पौधे तैयार होने के बाद बारिश शुरू होने पर जब खेत में पर्याप्त नमी आ जाए तो इन्हे रोप दें।

वर्तमान में देश में अरहर की उत्पादकता 760 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हैं। उत्पादकता कम होने के कारण प्रति व्यक्ति दाल की उपलब्धता लगभग 30 ग्राम प्रतिदिन है। जो विश्व स्वास्थ संघटन की अनुशंसा (80 ग्राम/व्यक्ति/दिन) से काफी कम हैं। देश और प्रदेश में अरहर की कम उत्पादकता के कारण निम्नानुसार है :–

- **अनुपयुक्त प्रजातियों का चयन एवं अधिक पौधा संख्या**
- **सीमांत एवं कम उपजाऊ भूमि में अरहर की खेती**
- **अनुचित फसल प्रबंधन एवं असंतुलित उर्वरक उपयोग**
- **अधिक या कम वर्षा में फसल पर प्रतिकूल प्रभाव**
- **दाना भरते समय कम नमी व पाले के प्रकोप से उपज में प्रतिकूल प्रभाव**

रोपाई के लिए कतार से कतार की दूरी 150 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 90 से.मी. रखनी चाहिए। अंत: फसल के रूप में सोयाबीन, मूँगफली, तिल की बोनी 1:3 (मुख्य व अनाथ फसल के अनुपात) में की जा सकती हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन : रोपण विधि से संपूर्ण खेत में पोषक तत्व के उपयोग के बजाय पौधावार तत्वों का प्रयोग करने से पौध अवशोषण बढ़ता है तथा तत्वों का ह्रास बहुत कम होता है जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि होती है। रोपाई के 4 से 6 दिन पश्चात पौधावार अनुशंसानुसार नत्रजन, स्फुर, पोटाश एवं सल्फर पोषक तत्व का उपयोग थाले में करना चाहिए।

शीर्ष कलिका विच्छेदन : रोपाई के 20 दिन बाद प्रत्येक पौधे की शीर्ष कलिका को तोड़ देना चाहिए। इस प्रक्रिया से पौधों में शाखाएं अधिक निकलती है जिसके फलस्वरूप उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। यह प्रक्रिया सामान्य विधि से उगाई गई अरहर की फसल में भी की जा सकती है। धारवाड़ (रोपण विधि) पद्धति से उत्पादन – उचित फसल प्रबंधन से धारवाड़ पद्धति द्वारा 30 से 35 क्विं/ हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती हैं।

अरहर की अन्त: फसल : अन्त: फसल के रूप में मक्का, मूंग, मूंगफल्ली, उड़द, सोयाबीन एवं शीघ्र पकने वाले धान के साथ इसकी सफल खेती की जा सकती है।

1. धान की मेंड़ो पर अरहर : अनूपपुर जिलें में अधिकतर क्षेत्र में धान उगाया जाता है। इस दशा में खेत की मेड़ो पर अरहर लगाकर प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।इस हेतु एक हेक्टेयर खेत के चारों मेड़ो के लिए 2 किलो बीज की मात्रा पर्याप्त होती है।

2. सोयाबीन के साथ अरहर: सोयाबीन के साथ अरहर को लगाने के लिए सोयाबीन की 4–6 कतारों के बाद अरहर की दो कतार लगाएँ। ऐसा करने से सोयाबीन कटने के बाद अरहर से अतिरिक्त उपज प्राप्त हो जाती है ।

3. धान के साथ अरहर: उच्चहन ढलान वाली भूमि जहाँ पानी नहीं रूकता हो, वहाँ धान के साथ अरहर लगाकर अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

बाल प्रश्नोत्तरी- 2

जीतें पुरस्कार बाल मित्रों मई का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **7566579448** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम शाश्वत हिन्दू गर्जना में प्रकाशित किये जाएंगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरूस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते

1. मध्यप्रदेश में किस आतंकी संगठन के आतंकवादियों को आतंकवाद निरोधक दस्ते (ATS) ने गिरफ्तार किया।
(अ) हिजबुल मुजाहिद्दीन (ब).हिब्ज–उत–तहरीर (स). लश्कर–ए–तोएबा (द). सिमी
2. प्रधानंमत्री इंदिरा गांधी ने लोकतंत्र को कुचलने के लिए भारत में आपातकाल कब लगाया था?
(अ). 1977 (ब). 1974 (स). 1975 (द). 1979
3. रानी दुर्गावती के बेटे का क्या नाम था?
(अ). शिवनारायण (ब). रामनारायण (स). बालनारायण (द). वीरनारायण
4. हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव किस महापुरूष के राज्यारोहण के कारण मनाया जाता है?
(अ). महाराणा प्रताप (ब). छत्रसाल (स). शिवाजी (द). चन्द्रगुप्त
5. मैंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित किया है। यदि मेरे देशवासियों को मेरे रक्त से संतुष्टि होती है तो मैं उसके लिए सहर्ष तैयार हूँ किसने कहा?
(अ).श्री गुरूजी (ब). वीर सावरकर (स). डॉ. हेडगेवार (द). चन्द्रशेखर आजाद
6. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कब मनाया जाता है?
(अ). 18 जून (ब). 21 जून (स). 24 जून (द). 25 जून
7. रीवा जिले के किस व्यक्ति ने अपने देह का दान किया?
(अ). मोहनलाल पटेल (ब). सोहनलाल पटेल (स). छोटेलाल पटेल (द).रोशनलाल पटेल
8. देवर्षि नारद पत्रकारिता पुरुस्कार किस संस्था द्वारा प्रदान किया जाता है?
(अ). पत्रिका समूह (ब). नई दुनिया (स). इंडिया टुडे ग्रुप (द). विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल
9. किस योजना के अंतर्गत म.प्र. में युवाओं को मिलेंगे 8 से 10 हजार रूपये?
(अ). मुख्यमंत्री सीखो और कमाओ (ब). मुख्यमंत्री जानो और पढ़ो
(स). बेरोजगारी भत्ता (द). कौशल विकास
10. प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के पैर किस देश के प्रधान मंत्री ने छुऐ?
(अ). अमेरिका (ब). जापान (स). पापुआ न्यु गिनी (द). इंग्लैन्ड

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-2)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम.....

पिता का नाम.....

उम्र.....पूर्ण पता.....

.....

.....पिन.....

मोबाईल नं.....

बाल प्रश्नोत्तरी- 1 के परिणाम

महेश्वरी

रिषी प्रताप

वेदांत

सेजल

मानवी

1. महेश्वरी मरकाम, पिपरिया, मण्डला
2. रिषी प्रताप बुन्देला, नरवां, सागर
3. वेदांत दिनेश, हिंगणघाट, नागपुर
4. सेजल बर्मन, शारदा चौक, जबलपुर
5. मानवी भाटिया, बेदीनगर ,जबलपुर
6. कात्यानी सोनी, पन्ना
7. हिमांशु नागवंशी, तामिया, छिंदवाड़ा
8. विनय फलियारे, सहेगांव, बालाघाट
9. धनन्जय कनौजिया, ग्वारी, मण्डला
10. महिमा त्रिपाठी, इन्दवार, उमरिया

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं ।

सही उत्तरः 1.(ब) 2.(द) 3.(अ) 4.(अ) 5(स) 6.(ब) 7.(ब) 8.(अ) 9.(अ) 10.(ब)

विश्व तीरंदाजी युवा चौम्पियनशिप स्वर्ण पदक प्राप्त किया रागिनी मार्को ने

स्वदेश लौटने पर कुंडम में हजारों लोगों ने रागिनी मार्को का स्वागत एवं सम्मान किया।

जबलपुर कुंडम की जनजाति बेटी रागिनी मार्को ने उज्बेकिस्तान में आयोजित हुई एशियन तीरंदाजी प्रतियोगिता में दो स्वर्ण पदक अर्जित किए। एक छोटे से गांव की जनजाति बेटी रागिनी मार्को ने जबलपुर सहित पूरे मध्यप्रदेश और पूरे देश का नाम रोशन किया।

देवर्षि नारद पत्रकारिता पुरुस्कार से सम्मानित हुए पत्रकार

विश्व संवाद केंद्र महाकौशल प्रांत द्वारा आयोजित देवर्षि नारद पत्रकारिता पुरस्कार समारोह 2023 का आयोजन प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी संस्कृति थिएटर भंवरताल जबलपुर में किया गया। पत्रकारिता पुरस्कार आयोजन में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रेस छायाकार और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कैमरामैन को चार श्रेणियों में प्रथम द्वितीय तृतीय पुरस्कार वितरित किये गए। पत्रकारिता पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में प्रोफेसर नीरजा गुप्ता, कुलपति सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय सांची एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यक्रम लक्ष्मण सिंह मरकाम आई ई एस अपर सचिव मध्यप्रदेश शासन ने की।

मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में संबोधित करते हुए प्रोफेसर नीरजा गुप्ता जी ने पूर्व समय की पत्रकारिता व वर्तमान समय की तीव्रता से बदलती हुई इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की हर एक खबर में प्रथम आने की चुनौतियों भरी पत्रकारिता एवं सोशल मीडिया की आप प्रमाणिकता से भरी हुई खबर को गंभीरतापूर्वक अनेकों अनेक उदाहरण देते हुए शानदार रूप से स्पष्ट किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह मरकाम ने कहा कि खबर पहले दाल रोटी थी अब चाट हो गई ।स्वरचित कविता को शानदार व व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत कर सभागार में उपस्थित संपूर्ण वर्ग व आयु के श्रोताओं को तालियाँ बजाने पर मजबूर कर दिया। श्री मरकाम ने अपने उद्बोधन में पत्रकार को सरकार एवं जनता के बीच एक प्रमुख सेतु बताया व उपस्थित सभी पत्रकार बंधुओं को हर हाल में सत्य ही लिखने व दिखाने हेतु प्रेरित किया।

इस अवसर पर प्रिंट मीडिया में प्रथम पुरुस्कार वीरेंद्र कुमार रजक, पत्रिका, जबलपुर, द्वितीय सूर्यप्रकाश विश्वकर्मा पीपुल्स समाचार सिवनी,तृतीय हर्षित चौरसिया, पीपुल्स समाचार, जबलपुर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रथम पुरुस्कार दुर्गेश साहू न्यूज़ नेशन जबलपुर, द्वितीय अमित सोनी बंसल न्यूज़ जबलपुर एवं तृतीय नीरज सोनी बुंदेली चुगली छतरपुर, प्रेस छायाकार प्रथम पुरुस्कार रविन्द्र विश्वकर्मा, **PTI** जबलपुर, द्वितीय जे.डी. पांडेय, दैनिक भास्कर जबलपुर तृतीय अफरोज खान पत्रिका जबलपुर, एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कैमरामैन प्रथम पुरुस्कार सुरेन्द्र पटेल बंसल न्यूज़ जबलपुर, द्वितीय सतीश सराठे, **IBC** न्यूज जबलपुर, तृतीय देवेन्द्र विश्वकर्मा, **INH** न्यूज़ जबलपुर को प्रदान किया गया।

शाश्वत हिन्दू गर्जना आर. एन.आई. संख्या– 69274 / 94 डाक पंजीयन संख्या –ल 4 / एनपी /शाहिग / एसएसपी जबलपुर 33 / 2023 2024 जून 2023

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

लाड़ली बहना योजना से बदलेगी महिलाओं की जिंदगी

उद्देश्य

- महिलाओं के स्वावलम्बन और उनके आश्रित बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत् सुधार को बनाए रखना।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बनाना।
- परिवार स्तर पर निर्णय लिए जाने में महिलाओं की प्रभावी भूमिका को प्रोत्साहित करना।

'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना' मेरे दिल से निकली योजना है। बहनों के जीवन को सरल, सुखद बनाना ही मेरे जीवन का ध्येय है। बहनें सशक्त होंगी तो परिवार, समाज, प्रदेश और देश सशक्त होगा। यह योजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, आत्म–विश्वास और स्वाभिमान बढ़ाने के लिए है।

– शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

- 23 वर्ष से 60 वर्ष की विवाहित बहनों को मिलेगा योजना का लाभ।
- प्रत्येक पात्र बहन को प्रतिमाह 1000/– रूपये।
- पात्र हितग्राही को राशि का भुगतान उनके आधार लिंक्ड डीबीटी इनविल्ड बैंक खाते में।
- 25 मार्च से प्रारंभ हो गया है आवेदन भरना।
- आवेदन के लिए हर वार्ड और गाँव में लग रहे हैं शिविर।
- ई–के.वाई.सी. का शुल्क (15 रुपये) अदा कर रही है राज्य सरकार।
- योजना की पहली किस्त 10 जून को बहनों के खातों में होगी जमा।

सशक्त महिला - सशक्त परिवार - सशक्त समाज - सशक्त मध्यप्रदेश

D19150/23

प्रकाशक एवं मुद्रक – नरेन्द्र जैन द्वारा विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास, के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारामुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र,प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर (मध्य प्रदेश), पिन– 482002दूरभाष 0761– 4006608, संपादक – डॉ. किशन कछवाहा